एशियाई और अफ्रीकी हाथी में अन्तर

जिस तरह इंसान दाएँ या बाएँ हाथ से काम करने वाले होते हैं उसी तरह हाथी भी दाईं और बाईं सूँड़ वाले होते हैं। यह ऐसे तय होता है कि कोई हाथी अपनी सूँड़ को किस तरफ ज़्यादा घुमाता है, किस तरफ ज़्यादा इस्तेमाल करता है।

अफ्रीकी हाथी

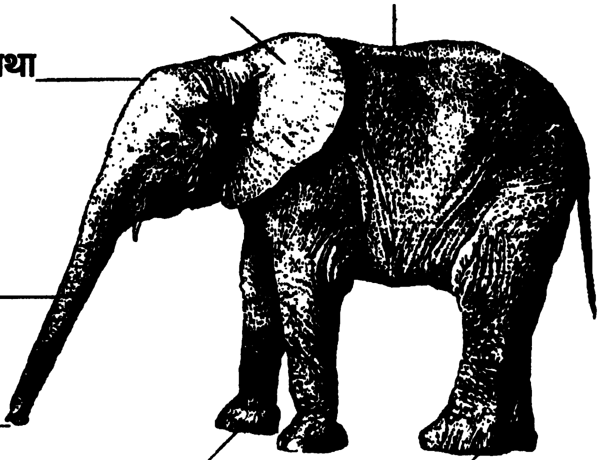

एशियाई हाथी

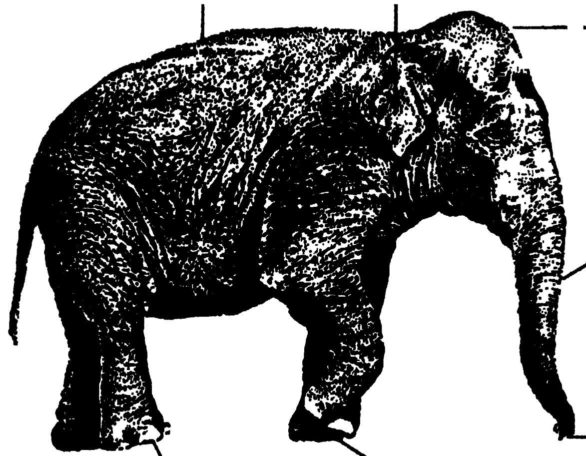

हाथी पर कुछ कहावतें

हाथी चले बाज़ार
कुत्ते भौंकें हज़ार।

हाथी निकल गया
दुम रह गई।

हाथी के दाँत
खाने के और
दिखाने के और।

हाथी जिए तो लाख का
मरे तो सवा लाख का।

यह सामग्री और चित्र सेंटर फॉर एंवायरनमेंट एजूकेशन (सी ई ई) की किताब 'एलीफेंटेसी' से साभार लिए गए हैं।

अपना बनाओ

यह बहुत ही आसान है।
मोटी कार्डशीट लो।
कार्बन या ट्रेसिंग पेपर की मदद से यहाँ दिया गया चित्र उस पर उतार लो।
फिर इसे काटकर अलग कर लो।

पूँछ

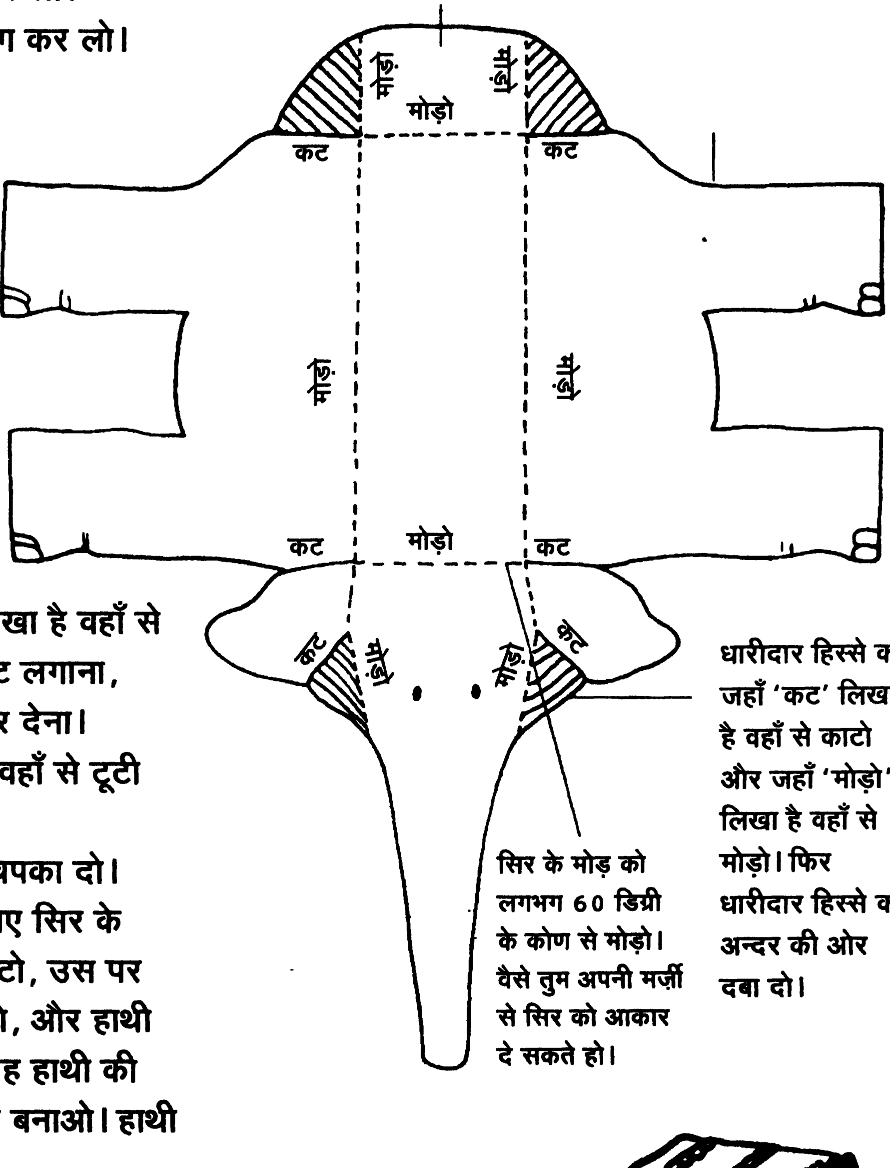

चित्र में जहाँ 'कट' लिखा है वहाँ से कट लगाओ। सिर्फ कट लगाना, काटकर अलग मत कर देना।
जहाँ 'मोड़ो' लिखा है वहाँ से टूटी रेखा पर से मोड़ लो।
अंत में पूँछ काटकर चिपका दो।
हाथी को सजाने के लिए सिर के आकार का कागज़ काटो, उस पर सुंदर डिज़ाइन बना लो, और हाथी को पहना दो। इसी तरह हाथी की पीठ के लिए भी झालर बनाओ। हाथी तैयार।

सिर के मोड़ को लगभग 60 डिग्री के कोण से मोड़ो। वैसे तुम अपनी मर्ज़ी से सिर को आकार दे सकते हो।

धारीदार हिस्से को जहाँ 'कट' लिखा है वहाँ से काटो और जहाँ 'मोड़ो' लिखा है वहाँ से मोड़ो। फिर धारीदार हिस्से को अन्दर की ओर दबा दो।

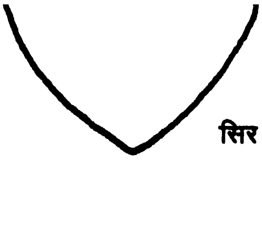

सिर के लिए सजावट

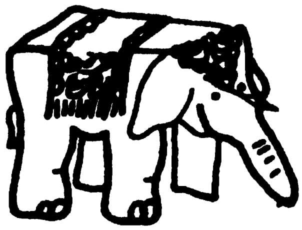

अनु विद्यार्थी, पाँचवीं, बीसलपुर, उ.प्र.

[illegible], तीसरी, [illegible].

एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-18 अंक-4 अक्टूबर 2002

सम्पादन
विनोद रायना
कविता सुरेश
टुलटुल विश्वास
सुशील शुक्ल

सहयोग
राकेश खत्री

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिंह
मनोज निगम
अशोक रोकड़े

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता –
एकलव्य
ई-7/453 एच.आई.जी.
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016
(म.प्र.)
फोन : 463380

कवर का काग़ज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

कहानी

12 ★ पूँछ पर दौड़
26 ★ साही और खरगोश

कविताएँ

3 ★ जाड़े की धूप
18 ★ चूहे

खेल-प्रयोग

11 ★ तुम भी बनाओ : लकड़ी का घोड़ा
17 ★ अपना हाथी बनाओ
24 ★ अपनी प्रयोगशाला : बुलबुले

हर बार की तरह

2 ★ इस बार की बात
4 ★ मेरा पन्ना
38 ★ माथापच्ची

और यह भी

8 ★ अधूरी कहानी पूरी करो
14 ★ बाल अखबार–कार्यशाला
19 ★ चिड़ियाघर में बीता समय
23 ★ चकमक समाचार
30 ★ बच्चों के अधिकार : फ्रांसीन लैन्सडाउन
31 ★ मुश्किल राहों को आसान बनाता....
34 ★ पुस्तक चर्चा
36 ★ खेल समाचार
40 ★ चित्र पहेली

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

अक्टूबर के इस अंक में तुम्हें कई तरह की सामग्री पढ़ने को मिलेगी। जैसे चित्रा की चिट्ठियों से तुम जान पाओगे कि चिड़ियाघर में किस तरह पक्षियों की देखभाल की जाती है। वहीं भोपाल के एक खास स्कूल के बारे में जानकारी है। इस स्कूल में ऐसे बच्चे पढ़ते हैं जिनकी उम्र के बढ़ने के साथ-साथ उनका दिमाग नहीं बढ़ पाया। ये बच्चे यहाँ पढ़ाई के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में भी भाग लेते हैं। और इस तरह अपने जीवन की मुश्किलों से लड़ते हुए आगे बढ़ते हैं।

इसके अलावा अफ्रीका और एशिया के हाथियों के बारे में जानकारी है। तुम यह भी पढ़ सकोगे कि एक अधूरी कहानी को अलग-अलग बच्चे किस तरह पूरी करते हैं। पुस्तक चर्चा में चार पुस्तकों के बारे में बताया गया है। ये किताबें ढूँढकर तुम ज़रूर पढ़ना। बाल अखबार कार्यशाला की रपट में अपने स्कूल का बाल अखबार बनाने और निकालने के बारे में जान पाओगे।

खेल, प्रयोग, माथापच्ची तो हैं ही और तुम्हारी अपनी रचनाओं के पन्ने 'मेरा पन्ना' भी है। हाँ इसी से याद आया तुम्हारी रचनाएँ आजकल हमें बहुत कम मिल रही हैं। यह ठीक है कि तुम सब स्कूल की पढ़ाई में लग गए होगे, लेकिन कभी-कभार चित्र बनाओ, कहानियाँ-कविताएँ लिखो और चकमक को भेजते रहो।

अंत में एक बात और, आजकल देश-दुनिया में जो घटनाएँ घट रही हैं उनके बारे में तुम अखबार में पढ़ते होगे या टी. वी. पर देखते होगे। इन पर तुम क्या सोचते हो, तुम्हारी राय क्या है? तुम कैसी दुनिया चाहते हो? इस बारे में हमें लिखना। तुम्हारी राय हम चकमक के अन्य पाठकों तक पहुँचाने की कोशिश करेंगे।

तुम्हारे पत्रों का, रचनाओं का इंतज़ार रहेगा, ज़रूर लिखना।

● चकमक

जाड़े की धूप

गाँव-गाँव
शहर-शहर,
धूप इधर
धूप उधर।
दिन उगे, उतरी है
दूर-दूर पसरी है
रामलाल की गैया
चारा तक बिर है

द्वार-द्वार
डगर-डगर
कलियों-सी चटक रही
लट्टू-सी मटक रही
कहीं-कहीं झाड़ों के
झुरमुट में अटक रही
जाड़े का
रहा न डर

सबको नमकीन लगे
कभी कहीं नहीं बिके
इस पूरे मौसम में
भोली और भली दिखे
मन कहता
और ठहर

● राजा चौरसिया

● चित्र : धनंजय

सलाम

मैंने एक औरत को मझधार में खड़े देखा
उसके लिए ज़िन्दगी बन गई थी एक पहेली
नहीं जानती थी कि वह कहाँ जाए
नहीं दिखाती थी वह किसी को अपने गम
होती जब अकेली तो आँसू भरभरा जाते
उसकी भावनाएँ बस भीतर ही रह जातीं।

हमेशा लोगों से रहती घिरी
जो कम ही होते थे भले
जो कर जाते कुछ और उदास
उससे पूछते आजकल के बारे में
और फेंक देते उसे उलझन के घेरे में
मैं दूर से उसे तकती
और मेरी रुलाई फूट पड़ती

जब गई कुछ और करीब
तो सब कुछ था एकदम साफ
वह कोई और नहीं
मेरी प्यारी माँ ही थी
गहरे अचम्भे से मैंने पूछा, 'क्यों'

वह बोली, 'कुछ शुरू करने के लिए मैंने
पिछले सबको अलविदा कह दिया
और अब मैं सिर्फ मंजिल देखती हूँ
कड़ी मेहनत और समर्पण के साथ'

मुझे गर्व है तुम पर मेरी माँ
मेरा सलाम है तुझे मेरी माँ।

● श्रेया सुकलिकर, भोपाल, म. प्र.

पूँछ

एक बार शोभा बुआ ने कहा कि लेटकर खाना खाओगी तो पूँछ निकल जाएगी।

मैंने एक बार लेटकर खाना खाया, मगर मेरी पूँछ नहीं निकली। मैंने शोभा बुआ से कहा कि मेरी पूँछ नहीं निकली।

पापा ने कहा कि एक बार शोभा की बहुत बड़ी पूँछ निकली। फिर उन्हें पूँछ काटनी पड़ी।

मगर मैं जानती हूँ कि शोभा बुआ मुझे उल्लू बना रही हैं।

● तारा रस्तोगी, सात वर्ष, भीमताल, उत्तराचल

● मानसी दीक्षित, पहली, भोपाल, म. प्र.

● ग्याती ताई, किमिन, पापुमपारे, अरुणाचल प्रदेश

छुट्टियों से पहले का अंतिम दिन

वह छुट्टियों से पहले का अंतिम दिन था। और प्रार्थना हो चुकी थी। पहला पीरियड, सर आए और उपस्थिति लेने लगे। तो कक्षा का एक साथी बोला 'सर! आज अंतिम दिन है। आज मस्ती करने दीजिए।' सारे साथी बोले, 'प्लीज़ सर! प्लीज़ सर!' सर बोले, 'ठीक है। ठीक है।' सब मिलकर मौज मनाने लगे। तीसरा पीरियड आ गया और दूसरे सर आए। सर बोले, 'मुझे ज़रा काम है। मैं अपना काम कर रहा हूँ। आप सब बैठकर कुछ पढ़िए।' सारे साथी बोले, 'सर हम चुपचाप क्रॉस वर्ड्स खेल लें।'

सर बोले, 'खेल लो, लेकिन शान्ति से खेलना।' सर का पीरियड तो ऐसा बीता जैसे यह आधा घण्टा दो घण्टे की तरह गुज़रा हो। तभी एक आवाज़ आई, 'पीयू...पीयू...' सब खिड़की की तरफ चले गए और बाहर हमने मोर देखा। वह पेड़ से उतर रहा था और हल्की-हल्की बारिश हो रही थी। मोर ने अपने पंख खोले और उसके पंख का रंग कुछ बदल-सा गया था। उसके सारे पंखों पर हरे-नीले की जगह संतरे जैसा रंग आ गया था। हम सब की आँखें चौंधिया गईं। वह पूरी छत पर टहलने लगा। पता नहीं क्या कर रहा था। शायद वह नाच रहा था। आधी छुट्टी की घण्टी सिर्फ कुछ साथियों के कानों में पड़ी। सब देखते रहे। छठा पीरियड था, मैडम आई। सारे साथी अपनी सीट पर बैठ गए। 'मैडम आज अंतिम दिन है पढ़ाई नहीं होगी।' मैडम ने कहा, 'अच्छा, चलो कहानी, चुटकले सुनाओ।' वह बहुत अच्छी मैडम है। सारे साथियों ने कुछ ने कुछ सुनाया। एक साथी बोला, 'मैडम हम कुछ कहना चाहते हैं।' मैडम बोली, 'बोलिए।'

वह बोला, 'मुझे ज़्यादा नहीं पता पर मैंने आज पहली बार एक पक्षी देखा। वह बहुत सुंदर था।' उसने और भी बहुत कुछ कहा था पर अंत में यह ज़रूर पूछा कि कौन-सा पक्षी ऐसा है जिसकी पूँछ पर पैसा है। सब बोले, 'मोर।'

मैडम चली गई। सारे लड़के लड़कियाँ फिर से खिड़की पर जमा हो गए। छुट्टी हुई, सभी चले गए। एक साथी ने मुझे कहा, 'हैप्पी हॉलीडेज़।' मैंने मोर से कहा, 'हैप्पी हॉलीडेज़' टू यू।'

● प्रतिभ कात्यायन, आठवीं, दिल्ली

चिड़िया का घोंसला

एक दिन हम नीम के पेड़ के नीचे खेल रहे थे। उस नीम के पेड़ पर एक चिड़िया का घोंसला था। हम घोंसले में से चिड़िया को उड़ाने के लिए पत्थर उछाल रहे थे। मैंने एक पत्थर उछाला तो वह सीधा घोंसले पर लगा और घोंसला नीचे गिर पड़ा। हम डर के मारे वहाँ से भागे।

मैं घर आ गई। थोड़ी देर बाद मैंने देखा कि मेरा चार्ट गुम हो गया है। मैंने उसे बड़ी मेहनत से बनाया था। मैं रोने लगी। रोते-रोते सो गई। अगले दिन वह चार्ट मुझे टीचर को दिखाना था।

अगले दिन मैं स्कूल गई तो टीचर ने पूछा, "तुम्हारा चार्ट कहाँ है?" मैं डर के मारे कुछ बोल नहीं सकी। टीचर ने मुझे बहुत डाँटा। मैं घर आकर बहुत रोई। माँ ने देखा तो मुझसे पूछा। मैंने बताया, "चार्ट गुम गया है। मैंने कितनी मेहनत से बनाया था।"

माँ ने कहा, "मैंने तुम्हारा चार्ट उठाकर उधर रख दिया था। अच्छा यह तो बताओ, तुमने चिड़िया का घोंसला क्यों गिराया था? उसने कितनी मेहनत से वह घोंसला बनाया होगा।"

मैं समझ गई माँ क्या कहना चाहती है। टीचर के डाँटने का मुझे कोई अफसोस नहीं रहा। लेकिन घोंसला गिराने का दुख हुआ।

● अंकिता पंड्या, पादरा, बड़ौदा, गुजरात

दिल्ली

कैसी है ये दिल्ली भाई
हमको तो कुछ समझ न आई।
दरियागंज में कहाँ है दरिया
चाँदनी चौक में कहाँ है चाँदनी
मयूर विहार में कहाँ है मयूर
पूराना किला नई दिल्ली में
कैसी है ये दिल्ली भाई
हमको तो कुछ समझ न आई।

● अनुभव, आठवीं, इलाहाबाद, उ.प्र.

मेरी छोटी-सी चिड़िया

फर-फर करके आती चिड़िया
दाल का दाना लाती चिड़िया
बच्चे को खिलाती चिड़िया
आती जाती वह चिड़िया
वह मेरी प्यारी चिड़िया।

● नील ताम्हणे, चौथी, इंदौर, म.प्र.

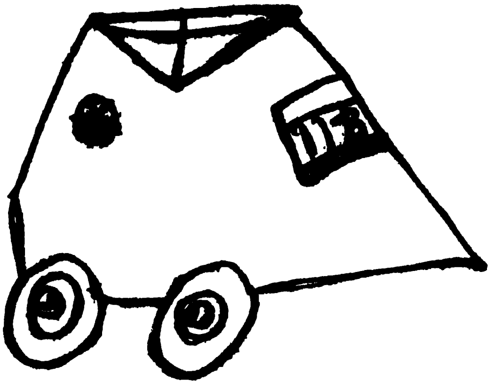

● आकाश खिंदरी, साढ़े पाँच वर्ष, अहमदाबाद, गुजरात

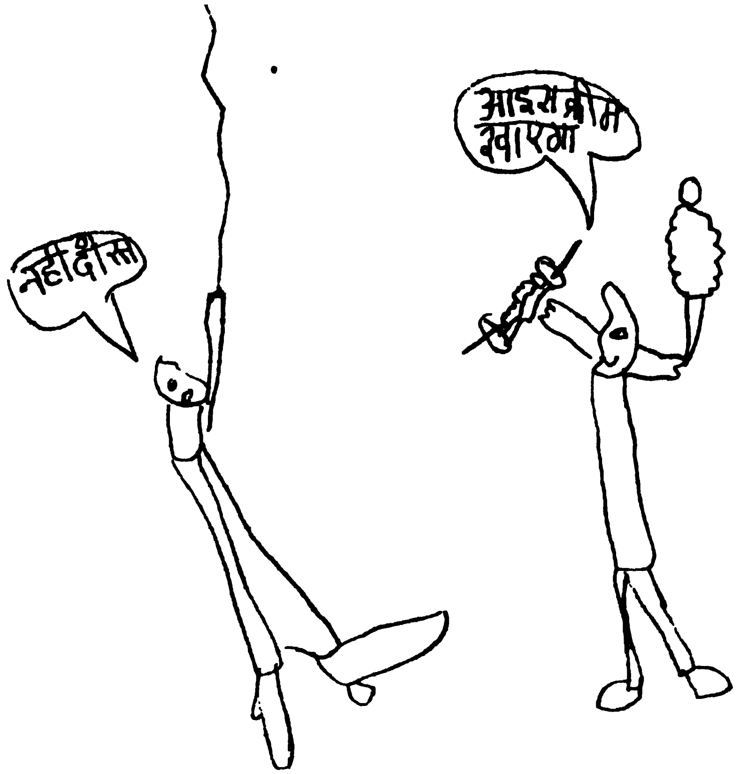

● साकार अग्रवाल, छह वर्ष, इंदौर, म. प्र

सपनों में परि याँ

मन मेरे को अच्छा लगता,
मन में ही सपने आते,
मन मेरे को अच्छा लगता,
मन में ही प्यारे फूल खिलते।
मन में ही परियाँ आतीं,
मन को बहुत लुभातीं।
मीठी-मीठी लोरियाँ सुनातीं।
अपने देश में ले जातीं,
बादलों में झूले झुलातीं।
मन को बहुत लुभातीं,
कहानियों से मेरा मन बहलातीं।
सुबह जब में सोकर उठती,
तो सब अपने घर चली जातीं।

● रूपल वैद्य, भोपाल, म. प्र.

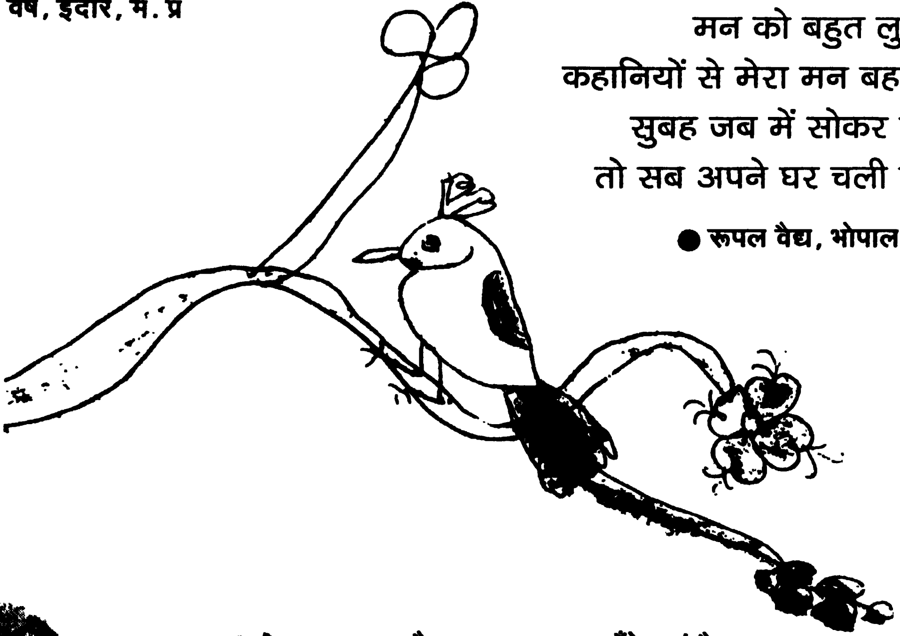

आशा कैलाश, कुड़ाना, साँवेर, इंदौर, म. प्र.

● सौरभ सेवल, चौथी, पंडाहा, सिरमौर, हिमाचल प्रदेश

लालू ने खाई मिर्च

भोपाल के कुछ स्कूलों में बच्चों के साथ 'कहानी पूरी करो' गतिविधि की गई। कई बच्चों ने इसमें भाग लिया। इस गतिविधि में कहानी 'लालू और पीलू' नाम की किताब से ली गई थी। यह किताब 'रत्न सागर' ने प्रकाशित की है। इस कहानी को लिखा है 'विनीता कृष्णा' ने और इसके चित्र बनाए हैं 'रेबती भूषण' ने। यह एक बहुत बढ़िया किताब है। इसकी मूल कहानी और कुछ कहानियाँ बच्चों की लिखी हुई, यहाँ तुम्हारे लिए छाप रहे हैं। पढ़ो और बताओ कैसी लगीं।

कहानी का यह हिस्सा 'कहानी पूरी करो' में दिया गया।

एक मुर्गी थी। मुर्गी के दो बच्चे थे – लालू और पीलू। लालू को लाल चीज़ें अच्छी लगती थीं, और पीलू को पीली। एक दिन लालू ने एक पौधे में कुछ लाल-लाल देखा। लालू उसे तोड़कर खा गया। यह तो लाल मिर्च थी....

इसके आगे मूल कहानी यूँ है –

लालू का मुँह जलने लगा। वह चिल्लाने लगा। मुर्गी माँ ने लालू की आवाज़ सुनी। वह दौड़ी-दौड़ी आई। पीलू ने कहा, 'मैं अभी कुछ लाता हूँ।'
वह पीले-पीले गुड़ का टुकड़ा ले आया। लालू ने गुड़ खा लिया। उसकी जलन ठीक हो गई। माँ ने लालू और पीलू को खूब प्यार किया।

बच्चों ने अधूरी कहानी कुछ इस तरह पूरी कीं–

॥ 1 ॥

....उसे मिर्च लगी तो उसने यह तय कर लिया कि मैं कभी लाल चीज नहीं खाऊँगा। इसी तरह एक बार पीलू को एक पौधा दिखा। वह पौधा नींबू का था। पीलू ने नींबू तोड़कर छिलके सहित खा लिया। और नींबू का छिलका तो कड़वा होता है। नींबू खाने के बाद उसको नींबू बहुत गंदा लगा। उसने भी पीली चीज़ कभी न खाना तय कर लिया।

और दोनों ने माँ से कहा, 'माँ हमारा नाम बदल दो क्योंकि हमारा नाम लालू और पीलू रहेगा तो हमें पीली और लाल चीज पसंद होगी। इसलिए आप हमारा नाम बदल दीजिए।

● इन्द्रा, छठवीं

॥ 2 ॥

...लालू को बहुत तीखा लगा। वह सू.. सू... करते हुए इधर-उधर भागने लगा। उसकी माँ ने उसे देखा और दाना खिलाने लगी। दाने फीके थे। जिससे लालू को मिर्ची लगना बन्द हो गई। फिर वह खेलने लगा।

पीलू अकेला ही घूम रहा था। उसे खेलते-खेलते भूख-प्यास लगने लगी। उसने देखा कि एक जगह नल बह रहा है। वहाँ से उसने पानी पी लिया। उसकी प्यास तो मिट गई। पर भूख ज़ोर से लग रही थी। खाने की तलाश में भटकते-भटकते बहुत दूर चला गया। वह सोचते-सोचते आगे चला गया कि अब मैं क्या खाऊँगा। भूख तो बहुत लगी है। उसने सोचा अब इस तरह भटकने से मेरी भूख नहीं मिटने वाली। भटकूँगा तो और भूख लगेगी। मैं वापस लौट जाऊँ तो अच्छा होगा। उसने पीछे मुड़कर देखा कि मैं तो बहुत दूर आ चुका हूँ। अब मैं क्या करूँ। शाम भी होने लगी।

लालू और उसकी माँ को चिन्ता होने लगी कि पीलू आखिर गया कहाँ। लालू और उसकी माँ दोनों पीलू को ढूँढने निकल पड़े। चलते-चलते वे सभी मिल गए। फिर उन्होंने वापस जाकर पेट भर दाना खाया।

● सपना नामदेव, छठवीं

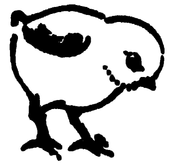

॥ 3 ॥

.... उसे बहुत तीखा लगा। उसने पीलू से कहा। पीलू को किसी पौधे में पीला फल दिखा। वह फल को तोड़कर खा गया। यह तो आम था। पीलू ने कहा, 'लो ये फल खा लो तो तुमको तीखा नहीं लगेगा।'

लालू ने कहा, 'मैं लाल चीज़ों के अलावा और कुछ नहीं खाता हूँ।'

पीलू ने कहा, 'मत खाओ।'

एक आदमी खेत में से गाजर खोद रहा था। लालू ने एक गाजर उस आदमी से लेकर खा लिया। और उसका तीखापन दूर हो गया।

पीलू को पीले भुट्टे दिख गए तो वह पूरा भुट्टा ही खा गया। 'अरे ये तो मेरे गले में फँस गया।' इतने में लालू को लाल फूल दिख गया तो उसने कहा, 'मैं इसको सुँघा दूँ तो तुम्हारे गले में फँसा हुआ भुट्टा बाहर आ जाएगा।' पीलू ने कहा, 'मुझे पीली चीज़ चाहिए। पीला फूल ले के आओ।' वह पीला फूल ले आया। और पीलू ने सूँघ लिया तो उसके गले का भुट्टा निकल गया और वो दोनों खेलते-खेलते घर चले गए।

● अनीता कुशवाह, छठवीं

॥ 4 ॥

....सू . . सू . . करते हुए इधर-उधर पानी देखा। 'आह, आह बड़ी तीखी मिर्च थी।'

वह माँ के पास पहुँचा। माँ ने कहा, 'अरे तेरी आँखो में से आँसू बह रहे हैं, क्यों।'

उसने कहा, 'माँ, मैंने एक पौधे में कुछ लाल-लाल मिर्च देखी और मुझे बहुत अच्छी लग रही थी। और मैंने उसे तोड़ लिया और टुकड़े-टुकड़े करके खा गया। उससे मेरी आँखों में आँसू आ गए। माँ शक्कर दे दो।'

माँ बोली, 'मुर्गी तू ऐसे टाईम पर आई कि जब घर में न तो शक्कर है न ही गुड़। जाकर अमन के घर से ले आ।'

'जी माँ।' कहकर भागकर अमन के यहाँ गया।

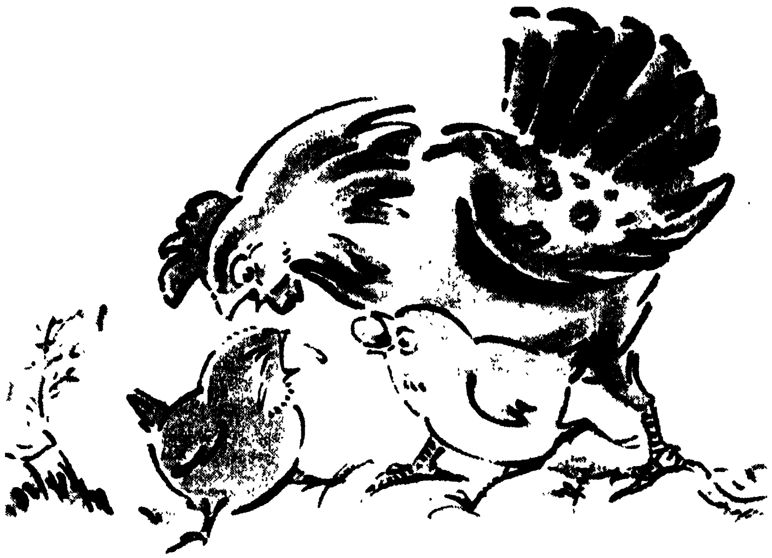

'अमन जल्दी से शक्कर दे दो।'

'पर क्यों दूँ?'

'अरे जल्दी दो शक्कर या गुड़।'

'अच्छा रुको मैं अभी लाता हूँ।' अमन गया और शक्कर लेकर आया। मुर्गी ने शक्कर खाई और खुशी-खुशी माँ के पास गया।

● साजिदा, छठवीं

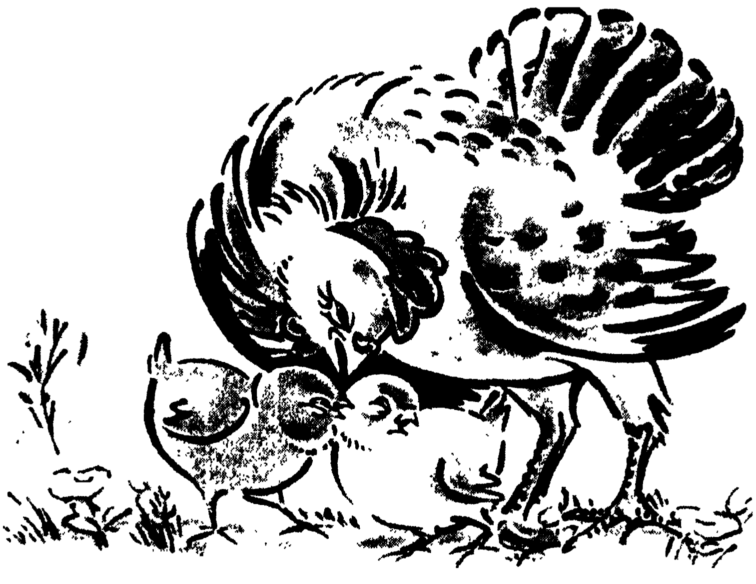

एक ही कहानी के अलग-अलग रूप कैसे लगे ज़रूर लिखना। अगर तुम कोई नया, अलग रूप सोच रहे हो तो हमें वह भी लिख भेजना।

लकड़ी का घोड़ा

लकड़ी से कोई आकृति बनाना थोड़ा मुश्किल और मेहनत का काम होता है। लकड़ी को आकृति के आकार में काटना छीलना पड़ता है। पर हम यहाँ ऐसा लकड़ी का घोड़ा (तुम चाहो तो कोई और आकृति भी बना सकते हो।) बनाएँगे जो बहुत आसान है।

इसके लिए तुम्हें ये सामान जुगाड़ना है – लकड़ी की बनी दाँत खोदनियाँ सा माचिस की तीलियाँ, फेवीकॉल, कैंची, पुराने अखबार।

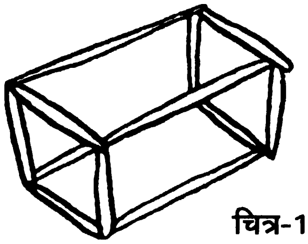

चित्र-1

- सबसे पहले तो तुम तय कर लो कि तुम्हें कौन-सी आकृति बनाना है। यहाँ घोड़े की आकृति बता रहे हैं।
- पहले अखबार बिछाकर उस पर जिस तरह की आकृति बनाना है उस हिसाब से काड़ियों को जमा लो।
- अब पहले काड़ियों को चिपकाकर एक आयताकार आकार बनाओ। चित्र-1
- तुम चाहो तो काड़ियों को चिपका-चिपकाकर पूरा आयत ढँक दो या चाहो तो सिर्फ बाहरी लाइन ही बनाओ।
- इस आकार को आधार बनाकर घोड़े के पैर बनाओ।
- इसके बाद लम्बी गर्दन, बड़ा सिर आदि जो भी तुम्हारी आकृति के लिए ज़रूरी हैं बनाओ। इन सबको बनाने के लिए भी काड़ियों का इस्तेमाल करो। जहाँ ज़रूरत हो काड़ियाँ तोड़कर छोटी कर लो।
- फिर पूँछ, आँखें, गर्दन के बाल आदि के लिए कागज़ या ऊन का इस्तेमाल कर सकते हो।

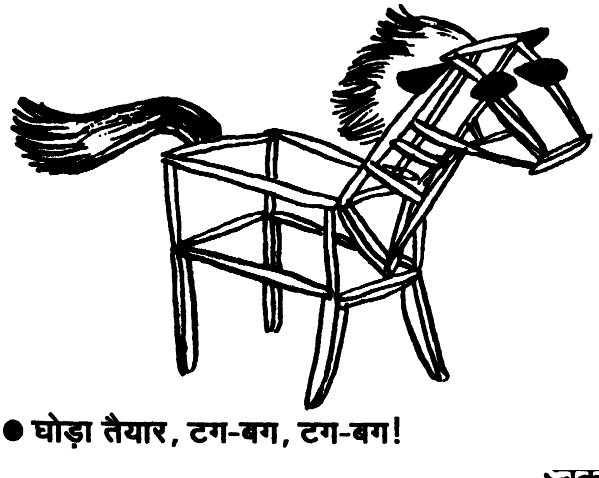

- घोड़ा तैयार, टग-बग, टग-बग!

कहानी

पूँछ पर दौड़

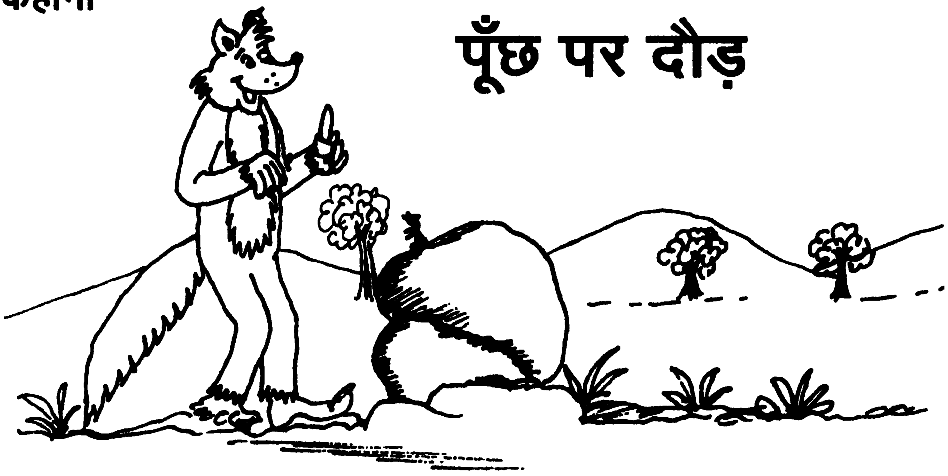

एक लोमड़ी और एक चींटी में दोस्ती हुई। दोनों ने मिलकर गेहूँ बोया

लोमड़ी हर रोज़ पेट दर्द का बहाना करती और काम से बच जाती। चींटी अकेली सुबह से शाम तक मेहनत करती रहती।

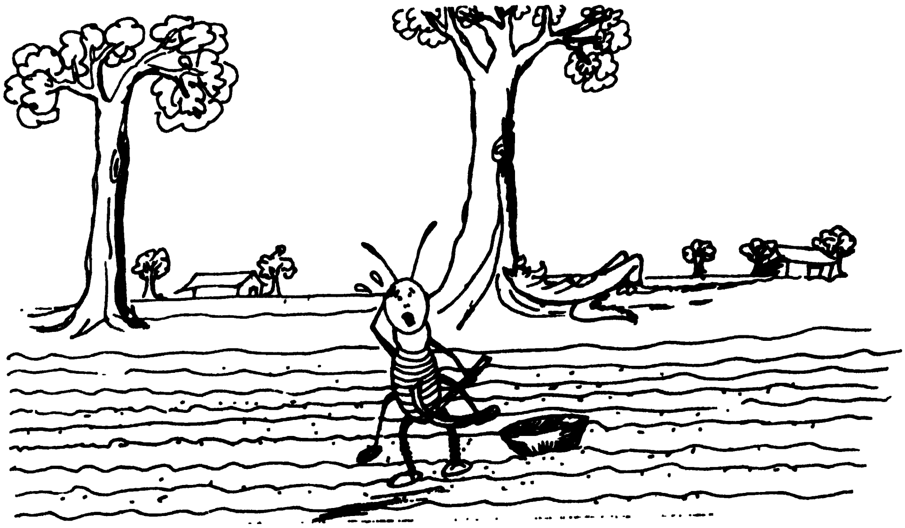

जब गेहूँ पक कर तैयार हुआ, तब लोमड़ी ने सोचा, 'क्यों न पूरा का पूरा गेहूँ मैं ही रख लूँ।'
उसने चींटी से कहा, "दोस्त, इस गेहूँ का बँटवारा क्यों करें?"
चींटी ने कहा, "फिर क्या करना होगा?"

लोमड़ी बोली, ''हम दोनों यहाँ से दौड़ लगाते हैं। जो पहले खलिहान पहुँचेगा, वह पूरा गेहूँ ले लेगा।'' चींटी तैयार हो गई।

लोमड़ी चिल्लाई, ''एक, दो, तीन।'' फिर वह पूरा ज़ोर लगाकर दौड़ी। चींटी लोमड़ी की पूँछ पर चिपक गई लोमड़ी को पता ही नहीं चला।

खलिहान में पहुँचकर लोमड़ी ने अपनी दुम ज़ोर से हिलाई। चींटी छिटककर गिर गई। चींटी जल्दी से गेहूँ के ढेर पर चढ़ गई।

फिर चींटी चिल्लाई, ''लोमड़ी तुम कहाँ रह गई थीं। मैं कब से यहाँ आ गई हूँ।'' लोमड़ी चुप रह गई। चींटी ने सारा गेहूँ ले लिया।

कहानी : 'खुशी-खुशी' से
चित्र : आकाश राजोरिया

बाल अखबार – कार्यशाला

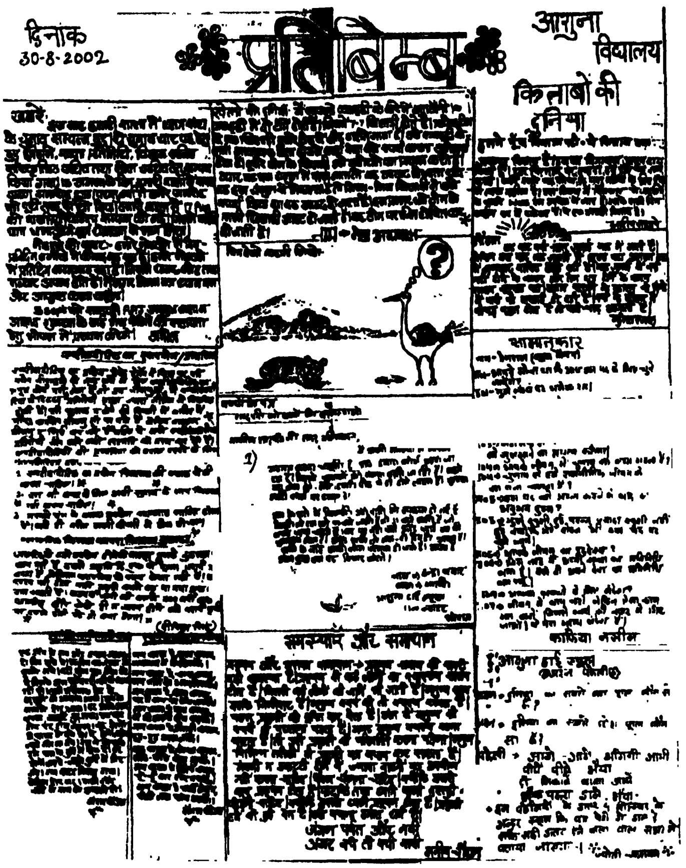

दोस्तो गर्मियों की छुट्टियों में हमने बताया था कि बाल अखबार की शुरुआत कैसे की जा सकती है। किस प्रकार सभी को मिलकर काम करना होता है और फिर सामग्री का चयन होता है। तभी हमने बाल अखबार के बारे में की गई एक कार्यशाला के बारे में भी बताया था। उस कार्यशाला में अखबार के लिए नई-नई सामग्री शामिल की गई थी।

पिछले दिनों हमने फिर से बाल अखबार पर एक कार्यशाला आयोजित की, जिसमें पाँच स्कूलों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। ये वही बच्चे थे जिन्होंने पिछली कार्यशाला में भी भाग लिया था। ये सरकारी व प्रायवेट दोनों तरह के स्कूलों के बच्चे थे। प्रत्येक स्कूल से 10 से 12 बच्चे आए थे और साथ में इन स्कूलों के वे शिक्षक भी थे जो बाल अखबार बनाने में मदद करते हैं। इस तरह कुल 61 बच्चों और 5 शिक्षकों ने इसमें भाग लिया।

कार्यशाला के आरम्भ में बच्चों के स्कूल स्तर पर समूह बनाए गए और फिर परिचय हुआ। इसके बाद बच्चों ने पुराने बाल अखबारों पर चर्चा की, जो उन्होंने अपने स्कूलों में बनाए थे। अखबार में कौन से कॉलम होंगे इस पर बात हुई। बातचीत के बाद क़ॉलम इस प्रकार तय किए गए।

1. खबरें/ जानकारी
2. विज्ञान और स्वास्थ्य
3. खेलों की दुनिया
4. साक्षात्कार
5. किताबों की दुनिया
6. समस्याएँ और समाधान
7. बच्चों के पत्र
8. कहानी और कविता (स्वरचित)
9. मौसम
10. प्रश्न पहेली

पुराने अखबारों की तुलना में तीन नए कॉलम जुड़ गए। प्रश्न पहेली, समस्याएँ और समाधान और बच्चों के पत्र। तय हुआ कि प्रश्न पहेली कॉलम में प्रश्न और पहेलियाँ होंगी। स्कूल में एक जगह पर पेटी या डिब्बा बनाकर रखा जाएगा जिसमें बच्चे अपने उत्तर लिखकर डालेंगे। इनमें से जिन बच्चों के उत्तर सही होंगे उनके नाम बालसभा या कार्यक्रमों में बताए जाएँगे।

इसी प्रकार समस्याएँ और समाधान कॉलम में बच्चे अपने आसपास की समस्याओं के बारे में लिखेंगे साथ ही कुछ समाधान भी सुझाएँगे। ये पत्र माता-पिता

के नाम या प्रधानाध्यापक के नाम या प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के नाम भी हो सकते हैं। एक पत्र राष्ट्रपति के नाम कुछ इस तरह लिखा गया –

''माननीय राष्ट्रपति जी सादर अभिवादन,

मैं अपनी समस्या से आपको अवगत कराना चाहती हूँ। प्रायः हमारा कोर्स बढ़ता जा रहा है जिसमें पुस्तकों की संख्या बढ़ती जा रही है। बस्ते का बोझ ढोते-ढोते हमारी पीठ में दर्द होने लगता है। कृपया हमारे कोर्स पर ध्यान दें।''

अखबार के नामों के बारे में भी बात हुई कि क्या नाम बदलना चाहिए। चर्चा के बाद तय हुआ कि अगर अखबार का नाम बदलना भी है तो स्कूल में ही सबकी राय लेकर बदला जाए।

इसके बाद एक-एक कॉलम पर बात हुई। जैसे खबरों वाले कॉलम में क्या लिखा गया? और इनमें क्या-क्या जोड़ना चाहिए? इस चर्चा के बाद सभी की सहमति से राय बनी कि खबरों को तीन भागों में बाँटना चाहिए।

1. हमारे आसपास की खबरें।

2. स्कूल की खबर, जैसे किसी ने परीक्षा में अच्छे नम्बर लिए हों, या किसी ने खेल में कुछ विशेष किया हो। इसमें स्कूल के कार्यक्रमों के बारे में जानकारी भी हो सकती है।

3. देश, विदेश और प्रदेश की खबरें।

इसी प्रकार प्रत्येक कॉलम पर चर्चा हुई। किसमें क्या नया जोड़ना है, क्या घटाना है, इस बारे में सबकी सहमति से एक राय बनी।

अब बारी आई सामग्री तय करने की। इसके लिए बच्चों को पुराने अखबार, पत्र-पत्रिकाएँ आदि दी गईं। उन्होंने आपस में मिलकर तय किया कि कौन-सी सामग्री दी जानी चाहिए और कौन-सी नहीं। इस प्रकार सामग्री तैयार हुई। फिर अखबार के लिए बड़ी-बड़ी कार्डशीट दी गईं। उन्होंने बहुत उत्साह के साथ साफ-सुथरे अखबार बनाए।

इस कार्यशाला में आए बच्चे अब अपने-अपने स्कूल में अखबार निकालने में दूसरे बच्चों की मदद करेंगे।

रपटः अरविंद जैन

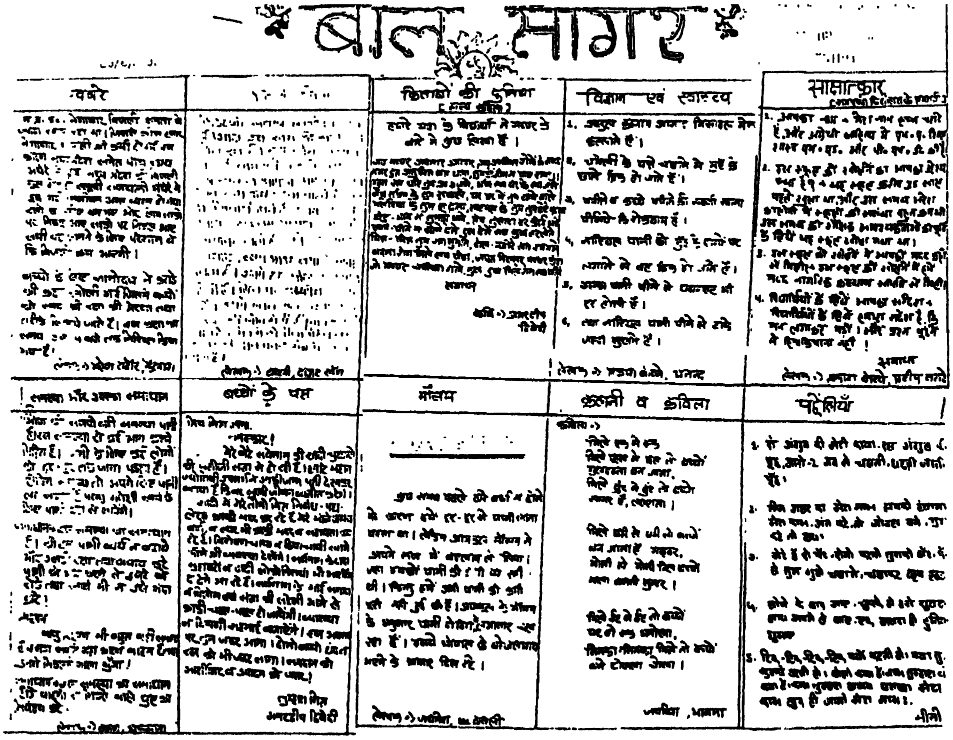

एशियाई और अफ्रीकी हाथी में अन्तर

जिस तरह इंसान दाएँ या बाएँ हाथ से काम करने वाले होते हैं उसी तरह हाथी भी दाईं और बाईं सूँड़ वाले होते हैं। यह ऐसे तय होता है कि कोई हाथी अपनी सूँड़ को किस तरफ ज़्यादा घुमाता है, किस तरफ ज़्यादा इस्तेमाल करता है।

अफ्रीकी हाथी

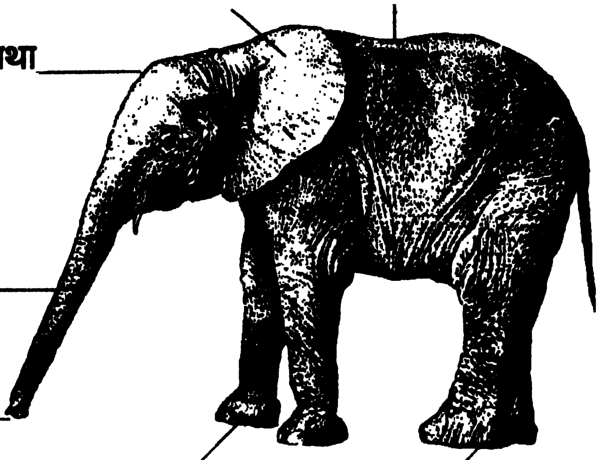

एशियाई हाथी

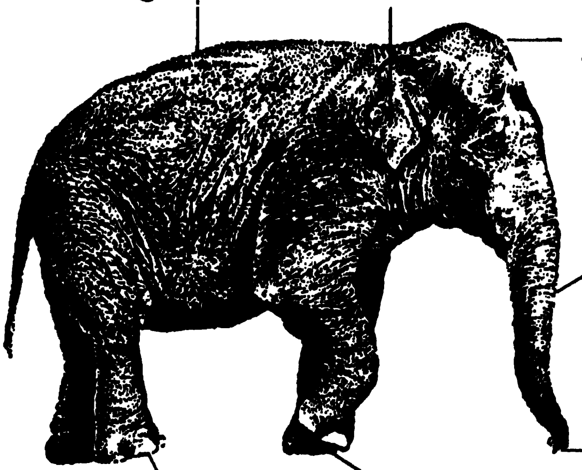

हाथी पर कुछ कहावतें

हाथी चले बाज़ार
कुत्ते भौंकें हज़ार।

हाथी निकल गया
दुम रह गई।

हाथी के दाँत
खाने के और
दिखाने के और।

हाथी जिए तो लाख का
मरे तो सवा लाख का।

यह सामग्री और चित्र सेंटर फॉर एंवायरनमेंट एजूकेशन (सी ई ई) की किताब 'एलीफेंटेसी' से साभार लिए गए हैं।

अपना बनाओ

यह बहुत ही आसान है।
मोटी कार्डशीट लो।
कार्बन या ट्रेसिंग पेपर की मदद से यहाँ दिया गया चित्र उस पर उतार लो।
फिर इसे काटकर अलग कर लो।

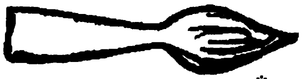

पूँछ

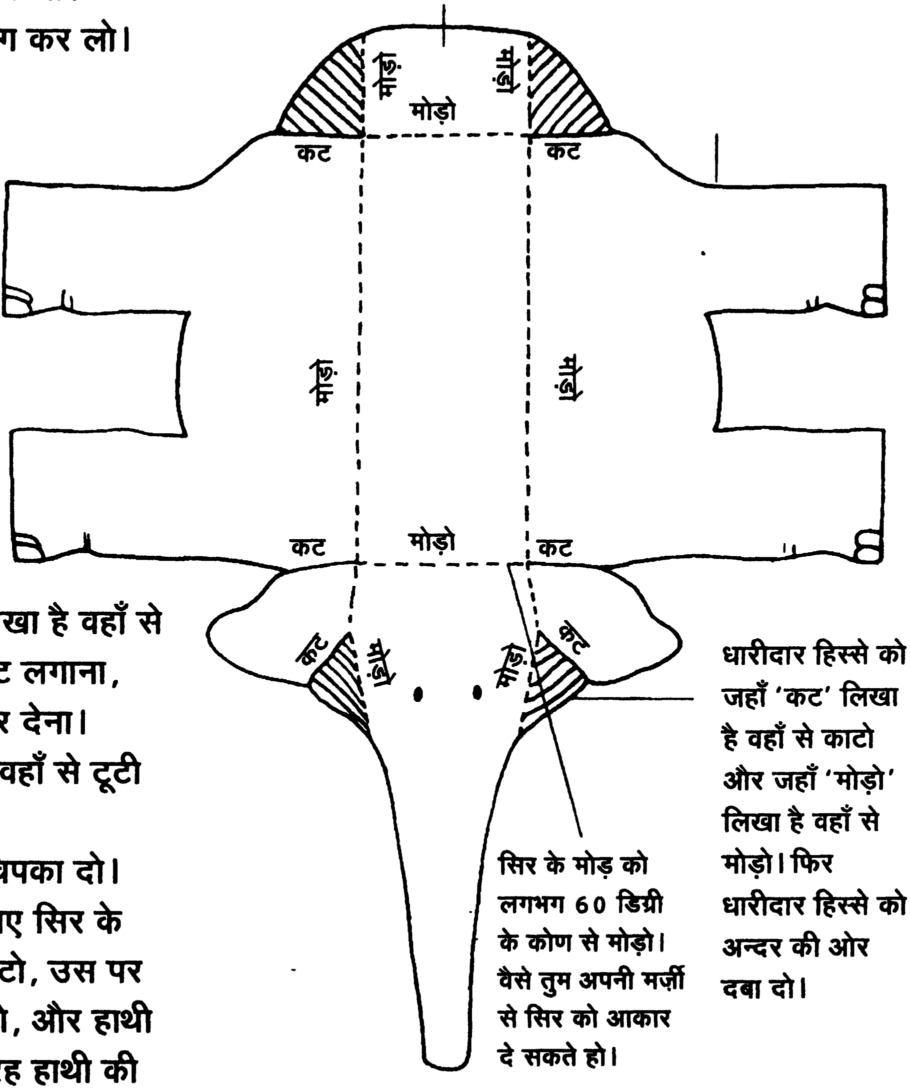

चित्र में जहाँ 'कट' लिखा है वहाँ से कट लगाओ। सिर्फ कट लगाना, काटकर अलग मत कर देना।
जहाँ 'मोड़ो' लिखा है वहाँ से टूटी रेखा पर से मोड़ लो।
अंत में पूँछ काटकर चिपका दो।
हाथी को सजाने के लिए सिर के आकार का कागज़ काटो, उस पर सुंदर डिज़ाइन बना लो, और हाथी को पहना दो। इसी तरह हाथी की पीठ के लिए भी झालर बनाओ। हाथी तैयार।

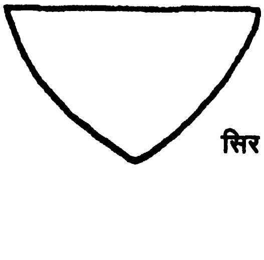

सिर के लिए सजावट

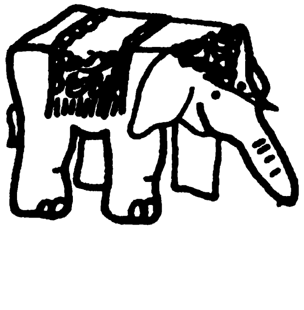

चूहे

बच्चों-से भोले-नादान
हैं शैतानों के शैतान!

भूरे, काले और सफेद
भूरे इनमें सबसे तेज़
धमाचौकड़ी, धींगामुश्ती
उछलकूद, आपस में कुश्ती
करते सबकी नींद हराम
ये शैतानों के शैतान!

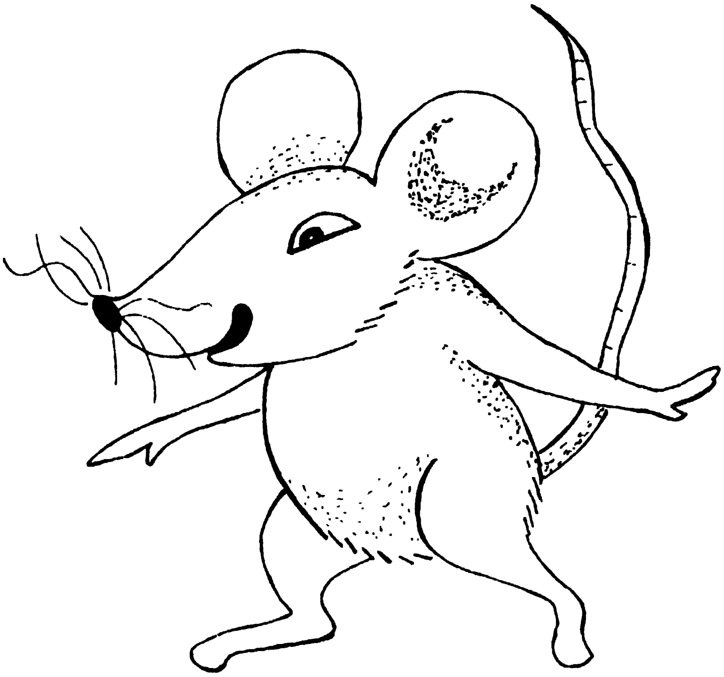

बिल से बाहर आ खिल जाते
भोजन तहस-नहसकर खाते
कपड़े और किताबें काटें
कुतर-कुतरकर नहीं अघाते
चूँ-चूँ गा करते ऐलान
ये शैतानों के शैतान!

मूँछें देखो, देखो आँखें
दुम ऐसी मानो हो पाँखें
यहाँ-वहाँ बेखटके आते
फिर क्षण भर में फुर्र हो जाते
बड़े-बड़ों के काटें कान
ये शैतानों के शैतान!

चतुराई की चमक दिखाते
झाँसे में ये कभी न आते
पिंजरा और ज़हर की गोली
पास न फटकें समझ ठिठोली
देख बिल्लियाँ हैं हैरान
ये शैतानों के शैतान!

● भगवती प्रसाद द्विवेदी

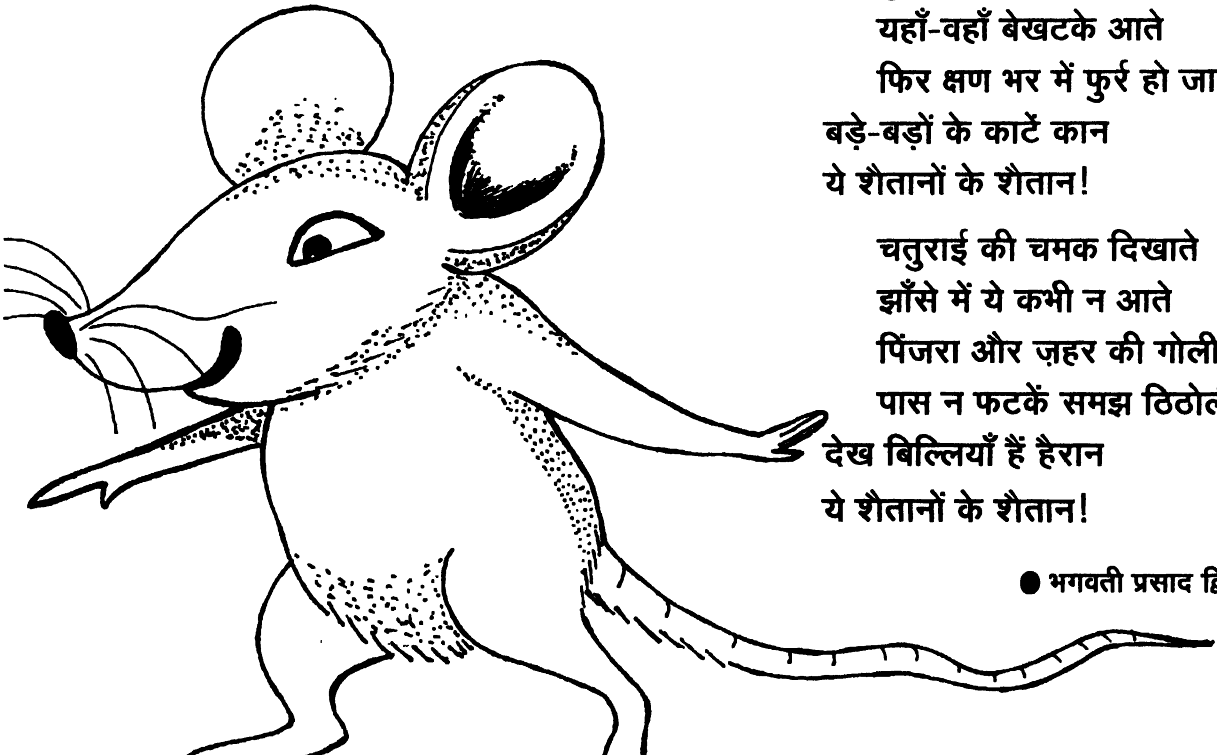

● चित्र : आशीष नगरकर

चिड़ियाघर में बीता समय

चकमक के एक दोस्त, शंकर की एक रिश्तेदार को एक अनोखा मौका मिला था अमरीका के एक चिड़ियाघर में कुछ समय के लिए काम करने का। उसने शंकर को अपने उन अनुभवों के बारे में कुछ मज़ेदार चिट्ठियाँ लिखी थीं। तुम भी पढ़ो . . .

इतवार / 5 अगस्त, 2001

प्रिय शंकर,

यकीन ही नहीं होता कि मुझे यहाँ सिर्फ एक हफ्ता ही हुआ है। लगता है कि सदियाँ बीत गईं। हवाई जहाज़ का सफर अच्छा था, मैं सुरक्षित पिछले शनिवार पहुँच गई थी। मैंने मंगलवार से ट्रायस्टेट बर्ड रेस्क्यू (त्रि-राज्य पक्षी बचाव केन्द्र) में काम शुरू किया। इसे हम 'रेस्क्यू' कहेंगे।

रेस्क्यू वह जगह है जहाँ घायल, और छोड़ दी गईं पालतू चिड़ियों की देखभाल की जाती है। जब चिड़ियाँ जंगल में रहने के काबिल हो जाती हैं, तो उन्हें छोड़ दिया जाता है। जो इस काबिल नहीं होतीं उन्हें या तो स्वस्थ हो जाने पर इच्छुक लोगों के घर भेज दिया जाता है, या फिर घातक रूप से घायल या बीमार पक्षियों को दयामृत्यु दे दी जाती है। (दयामृत्यु यानी किसी बहुत बीमार और मरणासन्न पर तरस खाकर उसे दवा देकर मारना।) यहाँ पक्षियों को पाला नहीं जाता है, न ही यह बूढ़े पक्षियों का घर है। इस वक्त यहाँ करीब 300 परिन्दे हैं। हर रोज़ नए और आ जाते हैं।

मैं यहाँ क्या करती रही हूँ? पक्षियों को खाना खिलाना, उनके पिंजड़ों और टोकरियों को साफ करना, उनका भोजन तैयार करना, (जब पक्षी लाने ले जाने के काबिल बन जाएँ तो) उन्हें एक जगह से दूसरी जगह ले जाना और अचरज के साथ दूसरे कार्यकर्त्ताओं को इतनी आसानी से परिन्दों को सम्हालते हुए देखना!!

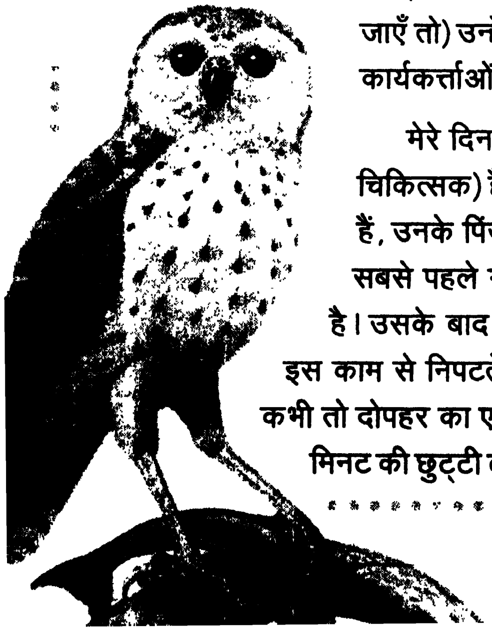

मेरे दिन की शुरुआत एरिका के साथ होती है जो यहाँ की डॉक्टर (पशु-चिकित्सक) है। हम सुबह सात बजे से चिड़ियों को दवा और खास आहार देते हैं, उनके पिंजड़ों और खाने के बर्तनों को साफ करते और बदलते चलते हैं। सबसे पहले गाना गाने वाले पैसरीन शिशु, बच्चे और वयस्कों की बारी आती है। उसके बाद उल्लू, बाज़, टर्न, हेरॉन, एग्रेट, आयबिस आदि। जब तक हम इस काम से निपटते हैं, अक्सर 10.30-11.00 बज चुके होते हैं, और कभी-कभी तो दोपहर का एक भी बज जाता है। अगर जल्दी काम निपट जाए तो मैं 5-10 मिनट की छुट्टी लेकर कॉफी पी लेती हूँ। देर हो जाए तो 15-20 मिनट में दोपहर

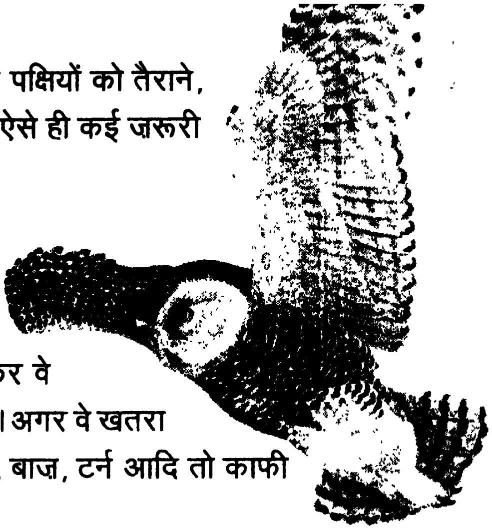

का खाना खा लेती हूँ। दोपहर का समय भोजन बनाने, पानी के पक्षियों को तैराने, एक बार फिर पिंजड़ों और खाने के बर्तनों को साफ करने और ऐसे ही कई ज़रूरी कामों में बीत जाता है।

कैसा चल रहा है यह सब – काफी थकाऊ। मेरे और चिड़ियों, दोनों के लिए थोड़ा तनावपूर्ण। तुम पूछ रहे हो क्यों? मुझे डर लगता है कि मैं अपने अनगढ़ तौर-तरीकों के कारण पक्षियों को, खासकर छोटे वालों को चोट पहुँचाऊँगी। और फिर वे भी तो मुझसे डरते हैं!! मैं भी बड़े वाले पक्षियों से थोड़ा घबराती हूँ। अगर वे खतरा महसूस करें तो बहुत बुरी तरह चोंच मारते हैं। खासकर उल्लू, बाज़, टर्न आदि तो काफी खूँखार होते हैं।

अरे हाँ, मैं यहाँ कार भी चलाने लगी हूँ। लेकिन तभी जब मेरी आंटी बगल में बैठी हों।

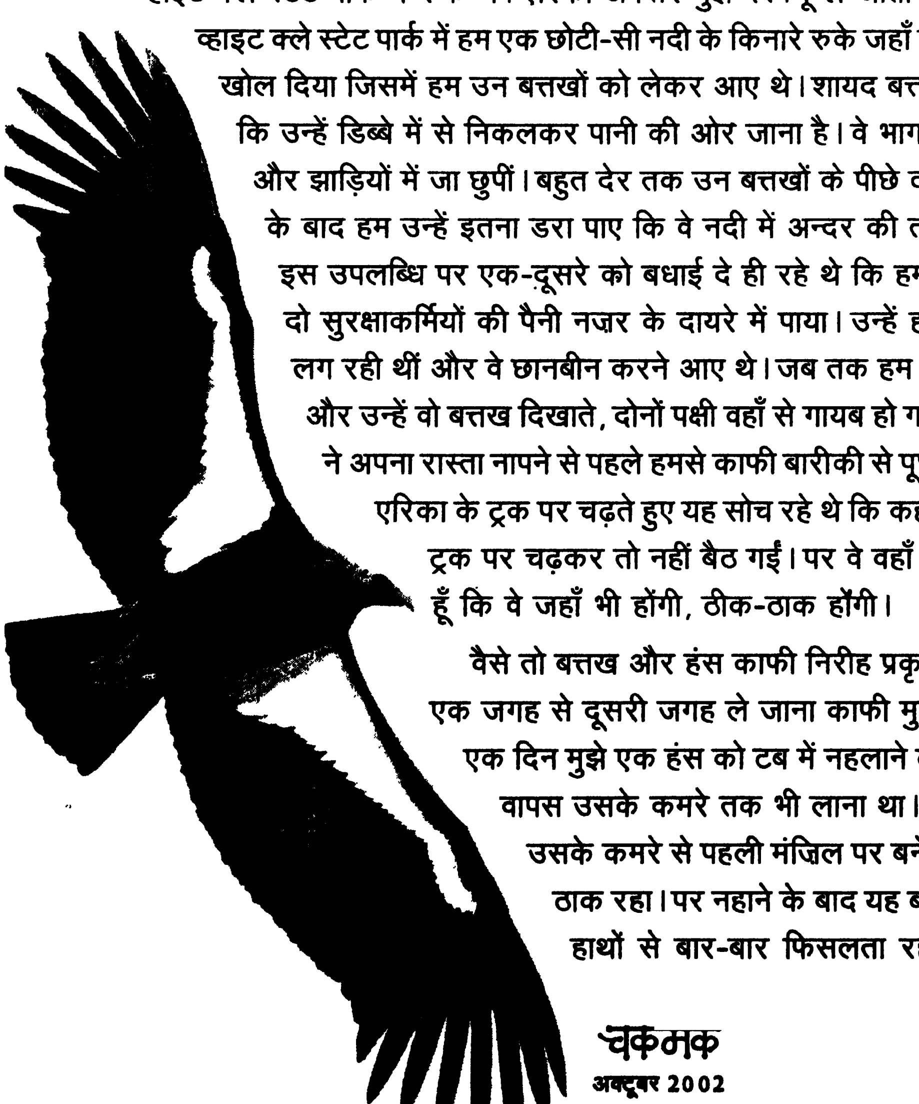

पिछले गुरुवार को रेस्क्यू से लौटते हुए एरिका और मैं दो बत्तखों को आज़ाद करने के लिए व्हाइट क्ले स्टेट पार्क में रुके थे। एरिका अक्सर मुझे रेस्क्यू ले जाती और वापस भी छोड़ती है। व्हाइट क्ले स्टेट पार्क में हम एक छोटी-सी नदी के किनारे रुके जहाँ हमने उस डिब्बे का ढक्कन खोल दिया जिसमें हम उन बत्तखों को लेकर आए थे। शायद बत्तखों को यह पता नहीं चला कि उन्हें डिब्बे में से निकलकर पानी की ओर जाना है। वे भागकर किनारे पर उगी काई और झाड़ियों में जा छुपीं। बहुत देर तक उन बत्तखों के पीछे दौड़ने-भागने और चिल्लाने के बाद हम उन्हें इतना डरा पाए कि वे नदी में अन्दर की तरफ चली गईं। हम अपनी इस उपलब्धि पर एक-दूसरे को बधाई दे ही रहे थे कि हमने खुद को वन विभाग के दो सुरक्षाकर्मियों की पैनी नज़र के दायरे में पाया। उन्हें हमारी हरकतें संदेहजनक लग रही थीं और वे छानबीन करने आए थे। जब तक हम उन्हें अपना मकसद बताते और उन्हें वो बत्तख दिखाते, दोनों पक्षी वहाँ से गायब हो गए थे। दोनों सुरक्षाकर्मियों ने अपना रास्ता नापने से पहले हमसे काफी बारीकी से पूछताछ की। हम भी थककर एरिका के ट्रक पर चढ़ते हुए यह सोच रहे थे कि कहीं वे बत्तख धीरे-से चुपचाप ट्रक पर चढ़कर तो नहीं बैठ गईं। पर वे वहाँ नहीं थीं। मैं उम्मीद करती हूँ कि वे जहाँ भी होंगी, ठीक-ठाक होंगी।

वैसे तो बत्तख और हंस काफी निरीह प्रकृति के जीव हैं, परन्तु उन्हें एक जगह से दूसरी जगह ले जाना काफी मुश्किल काम हो सकता है। एक दिन मुझे एक हंस को टब में नहलाने ले जाना था और फिर उसे वापस उसके कमरे तक भी लाना था। किसी तरह से तलघर के उसके कमरे से पहली मंज़िल पर बने टब तक का सफर ठीक-ठाक रहा। पर नहाने के बाद यह बंदा चंचल हो गया और मेरे हाथों से बार-बार फिसलता रहा। हम आमतौर पर बड़े

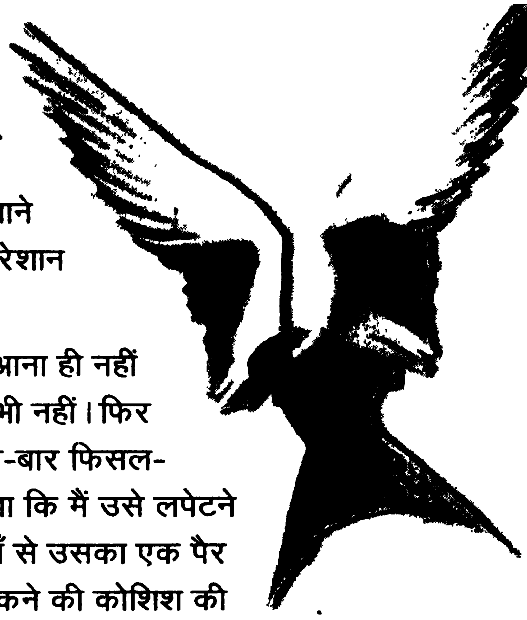

परिन्दों को तौलिये में लपेटकर ले जाते हैं। इससे दो फायदे होते हैं। एक तो वो आपके कपड़े खराब नहीं कर पाते और दूसरा, जब उनके सिर ढके हुए हों और लाने-ले जाने के दौरान उन्हें आस-पास का नज़ारा नहीं दिखे, तो वे परेशान कम होते हैं।

ये जनाब तो खास ही थे। अव्वल तो वे टब से बाहर आना ही नहीं चाहते थे। जब मैंने टब का सारा पानी निकाल दिया, तब भी नहीं। फिर जब मैंने उसे चादर से लपेटने की कोशिश की तो वह बार-बार फिसल-फिसलकर बाहर निकल जाता। फिर अंत में जब मुझे लगा कि मैं उसे लपेटने में कामयाब हो गई थी, और मैंने उसे उठाया तो जाने कहाँ से उसका एक पैर निकल आया और मुझे एक लात पड़ी। जब मैंने पैर को ढकने की कोशिश की तो उसका सिर बाहर निकल आया और वह गर्दन मोड़कर बहुत शिकायत भरी नज़रों से मुझे देखने लगा!! फिर तो मैंने उसे जैसे-तैसे सीढ़ियों पर से घसीटकर उतारा और उसके कमरे में पटक दिया। मुझे लगता है कि इन पक्षियों को उठाते फिरने का काम सीखने में मुझे अभी कुछ और वक्त लगेगा।

अभी तक मैं 9–10 घण्टे की पारियों में काम करती रही हूँ। जब तक मैं अकेले गाड़ी चलाकर आने-जाने के लायक न हो जाऊँ, तब तक मुझे रेस्क्यू आने और वापस घर जाने के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। सो, अभी मेरा समय दूसरों के हिसाब से कुछ-कुछ तय हो जाएगा।

तुम कैसे हो? वहाँ सब ठीक है न। कभी-कभार एकाध लाइन लिख दिया करो।

चित्रा

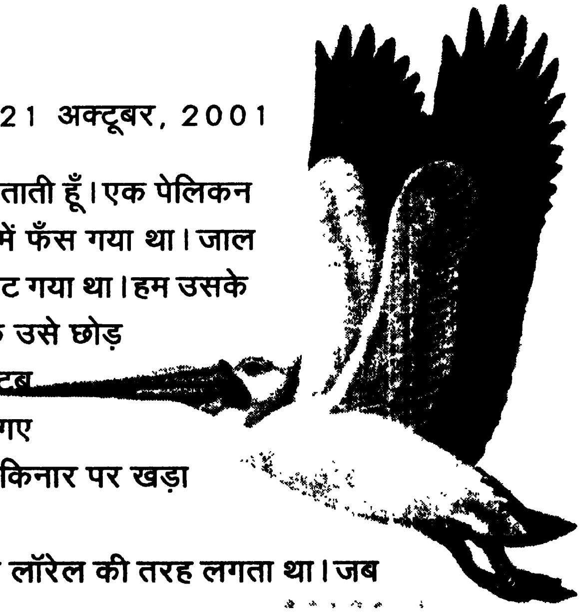

इतवार / 21 अक्टूबर, 2001

आज मैं तुम्हें यहाँ हाल ही में आए एक पक्षी के बारे में बताती हूँ। एक पेलिकन पिछले से पिछले हफ्ते आया था। यह एक मछली के जाल में फँस गया था। जाल की एक तार उसके एक पंख से लिपट गई थी जिससे पंख कट गया था। हम उसके पंख के व दूसरे घावों के भरने का इंतज़ार कर रहे हैं ताकि उसे छोड़ दिया जा सके। उसके पंख से तार निकालकर हमने उसे टब में नहाने के लिए छोड़ दिया था और खुद खाना खाने चले गए थे। जब हम लौटे तो देखा कि वह हमारे इंतज़ार में टब की किनार पर खड़ा हुआ था।

उसके चेहरे का भाव बिल्कुल लॉरेल-हार्डी कार्टून वाले लॉरेल की तरह लगता था। जब

भी हम उसके पिंजड़े के पास मस्ती करते घूमते हैं, उसके चेहरे पर यह धीर, मज़ेदार-सा भाव उभर आता है।

पहले दिन तो यह इतना तनाव में था कि हमें उसे ज़बर्दस्ती खाना खिलाना पड़ा। जब पेलिकन तनाव में होते हैं तो चबाया हुआ भोजन वापस मुँह से बाहर निकाल देते हैं। तो इस पेलिकन को शांत और स्थिर रखने के लिए एक व्यक्ति इसके ऊपर बैठा, एक ने उसका चोंच खोला और मैं उसके ग्लोटिप (श्वास नली का दरवाज़ा) से बचाते हुए मछली उसके गले उतारती रही! और.. उहुँ... उसके मुँह से क्या बास आ रही थी!!

जब मैं कुछ मछलियाँ उसके गले उतार देती, तो हम कुछ देर के लिए उसे अकेला छोड़ देते ताकि वह हम इंसानों को देखकर डर के मारे उल्टियाँ न करने लगे। वैसे वह बहुत ही प्यारा है। अब तो वह हमारे हाथों से मछली लेकर खा लेता है। दूसरे लोग तो हाथ से ही खिलाते हैं पर मैं अभी भी चिमटे की मदद से खिलाती हूँ। वह मछली देखकर झपटता है और मैं नहीं चाहती कि उसके चोंच की नोंक से मेरी उँगलियाँ छिल जाएँ। जब उसका पेट भर जाए तो वह मछली लेकर उन्हें इधर-उधर उछाल देता है।

एक हमिंगबर्ड भी लगभग उसी समय पर आया था जब पेलिकन आया। इसकी समस्या यह थी कि यह किसी ठोस चीज़ के आघात लग जाने के कारण बेहोश हो गया था और उसके खून का थक्का भी जम गया था। इसके कारण यह कहीं खड़ा नहीं हो पा रहा था। और लगातार पंख फड़फड़ाकर उड़ते रहने वाले हमिंगबर्ड को हर कुछ देर में आराम करने के लिए बैठना ज़रूरी होता है।

सभी तरह के हमिंगबर्ड जाड़ों में यहाँ से प्रवास पर दक्षिण अमरीका जाते हैं। और अगर इस शख्स ने डंगाल पर बैठना न सीखा तो यह कभी वहाँ तक नहीं पहुँच पाएगा। फिलहाल इसने इतनी प्रगति की है कि यह एक पैर से डंगाल को जकड़ लेता है। इस दौरान दूसरा पैर लटकता रहता है और पंख लगातार फड़फड़ाते रहते हैं!! तो पूरे समय ऐसा लगता है जैसे कि उसका कोई संतुलन है ही नहीं!! या फिर वह डंगाल पर दोनों तरफ टाँगें लटकाकर बैठ जाता है। इसे अभी यह समझ में नहीं आया है कि ठीक तरह से आराम कर पाने के लिए उसे अपने पंख फड़फड़ाना भी बन्द करना होगा। इसलिए जब यह वाकई बहुत थक जाता है तो पिंजड़े के फर्श पर ढुलककर हाँफने लगता है। यह इतना मजेदार है कि कोई दिन भर बैठकर भी इसे निहारता रह सकता है!

अभी इतना ही। बताना, मेरे अनुभव पढ़ने में कैसे लगे। और चिट्ठी लिखना।

चित्रा

मूल पत्र अँग्रेज़ी में। अनुवाद – टुलटुल विश्वास। इस लेख में आए सभी चित्र 'वर्ल्ड एटलस ऑफ बर्ड्स', 'द डोरलिंग किंडर्सले बर्ड एटलस', 'द पिक्टोरियल बुक ऑफ बर्ड्स' एवं टाइम लाइफ सीरीज़ की 'बर्ड्स' से साभार लिए गए हैं।

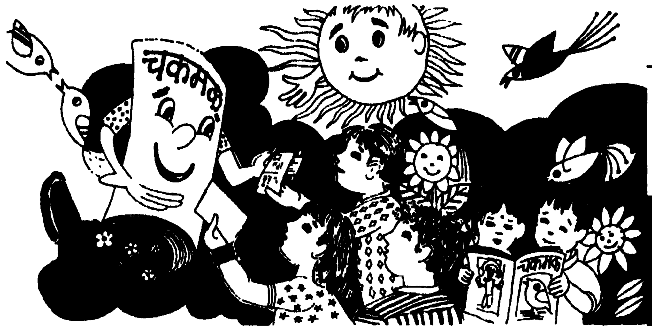

चकमक समाचार

बच्चों की अदालत

भोपाल में पिछले दिनों एक अजब अदालत लगी, बच्चों की अदालत। बच्चों की अदालत में हाज़िर हुए बच्चों के लिए लिखने वाले लोग। सवाल जवाब का यह गरमागरम दौर दो-तीन घण्टे चला। दर्जनों सवाल उठे। और कई सवालों ने बड़ों को लाजवाब किया। किसी ने पूछा कि बाल साहित्य लिखने वालों को बच्चों की रुचि का पता कैसे चलता है? यानी बच्चों की पसंद-नापसंद जानने के लिए वे क्या करते हैं? तो किसी ने पूछा कि उम्दा बाल साहित्य का मतलब क्या होता है? बच्चों और लेखकों की ऐसी बातचीत इतनी कम क्यों होती हैं? बड़े, बच्चों तक अच्छा साहित्य पहुँचाने के लिए कोई कोशिश क्यों नहीं करते?

इस अनूठी अदालत में लेखक धनंजय वर्मा के अलावा वरिष्ठ बाल साहित्यकार डॉ. श्रीप्रसाद भी मौजूद थे। कार्यक्रम का समापन एक प्रस्ताव पारित होने के साथ हुआ। प्रस्ताव में बच्चे और बच्चों के साहित्य को मज़बूत करने वाले मुद्दे थे। मसलन गाँवों और शहरों में बाल साहित्य पुस्तकालय खोले जाने चाहिए। इस प्रस्ताव पर तमाम साहित्यकारों और बच्चों ने दस्तखत किए।

साकड़ पृथ्वी सम्मेलन

पिछले महीने दक्षिण अफ्रीका की राजधानी जोहंसबर्ग में पृथ्वी सम्मेलन हुआ था। (तुम जानते ही हो इस सम्मेलन में दुनिया के तमाम देशों ने भाग लिया था।) इसी सम्मेलन की तर्ज़ पर म.प्र. के बड़वानी ज़िले के एक छोटे-से गाँव साकड़ में भी पृथ्वी सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन के कर्त्ताधर्ता आधारशिला शिक्षण केंद्र के बच्चे थे।

11 से 14 साल की उम्र के 56 बच्चों ने पर्यावरण और गरीबी से जुड़े तमाम मुद्दों पर बात की। सम्मेलन की शुरुआत में जोहंसबर्ग पृथ्वी सम्मेलन के बारे में कुछ जानकारियाँ दी गईं। दस दिन तक चले इस सम्मेलन में कई रचनात्मक गतिविधियों के साथ-साथ जागरूकता अभियान भी चलाया गया।

'जंगल बचाओ यात्रा' इस सम्मेलन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा। आधारशिला शिक्षण संस्थान में बच्चों को बेहतर शिक्षा देने के साथ -साथ पर्यावरण से जुड़ी गतिविधियाँ भी कराई जाती हैं।

इस सम्मेलन में आठ शिक्षकों ने भी बच्चों की मदद की। टिकाऊ तरक्की, बड़े बाँध, उद्योगों से प्रदूषण आदि कई मुद्दों पर बहस हुई।

बुलबुले – तरह तरह के

साबुन के पानी से बुलबुले बनाने का खेल तुमने ज़रूर खेला होगा। अगर न खेला हो तो अब खेलना।

– बुलबुले बनाने के लिए तार के टुकड़े मोड़कर छोटे-बड़े गोले बनाओ। इन्हें हम लूप कहेंगे।
– एक कटोरी या मग में थोड़ा पानी लेकर उसमें साबुन घोलो।
– तार का बना लूप साबुन पानी में डुबाकर निकालो और फूँक मारो।

बुलबुला बना या नहीं? इसे बार-बार करो और ठीक से करने की कोशिश करो।

चलो अब थोड़ा आगे चलते हैं।

– अलग-अलग तरह के बुलबुले बनाने के लिए अलग-अलग तरह के आकार के लूप तार से बनाओ।
– छोटे-बड़े गोले, 8 का आकार और चौकोर आदि कई आकारों में लूप बनाओ। (चित्र-1)

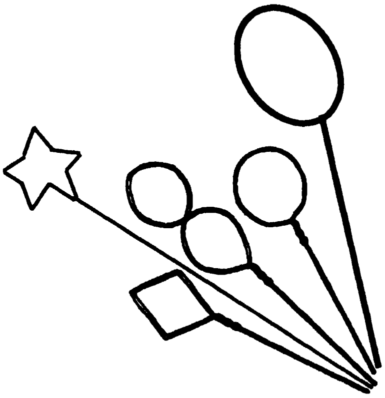
चित्र-1

एक से दो बुलबुले

– यहाँ चित्र-2 में दिखाया गया है कि एक बुलबुले को दो बुलबुलों में करने के लिए क्या करना है।

समझ में आया कुछ?

– दो लूपों में एक साथ बुलबुला बनाओ।
– फिर दोनों लूपों को थोड़ा दूर-दूर ले जाओ लेकिन देखो बुलबुला टूटे नहीं।

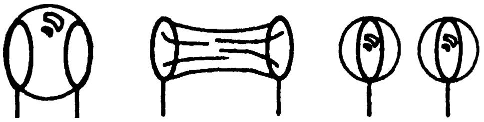
चित्र-2

दो से एक बुलबुला

– इसके बाद (चित्र-3) इसका उल्टा दिखाता है। दो बुलबुलों को जोड़कर एक बुलबुला बनाओ।

इसे तुम खुद करके देखो।

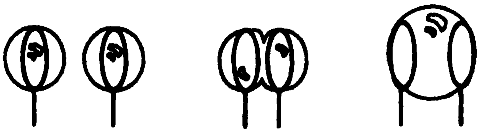
चित्र-3

– एक चौड़ी प्लेट में साबुन-पानी लो।
– एक स्ट्रॉ पाइप का एक सिरा गीला करके साबुन-पानी में डालो।
– पाइप के दूसरे सिरे से फूँककर एक बड़ा बुलबुला बनाओ। यह आधे गोले जैसा बुलबुला बनेगा।
– अब बहुत सम्हलकर स्ट्रॉ को बाहर निकालो कि बुलबुला न टूटे। (चित्र-4)
– यह एक बार में न हो तो बार-बार करके देखो।
– जब प्लेट पर बुलबुला बनकर ठहर जाए तो पहले गीली उँगली से छूकर देखो।
– फिर सूखी उँगली से छूकर देखो। क्या हुआ?

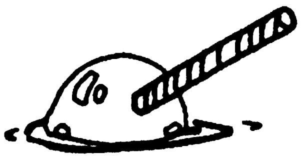

चित्र-4

बड़े में छोटा बुलबुला

– इसी तरह प्लेट में बने आधे बुलबुले में गीला स्ट्रॉ घुसाकर एक और छोटा बुलबुला बनाने की कोशिश करो। (चित्र-5)

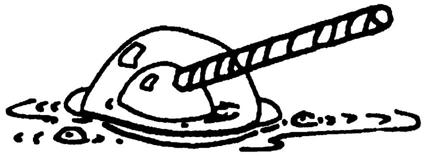

चित्र-5

बुलबुले से इल्ली

– एक और मज़ेदार काम – इसी तरह के बुलबुलों से इल्ली का आकार बनाओ। (चित्र-6)

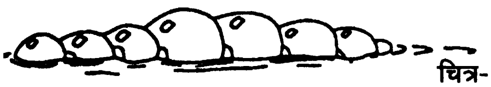

चित्र-6

छोटा बुलबुला बड़े के अन्दर

– एक 15 सेंटीमीटर लम्बी लकड़ी या छड़ ज़मीन में गाड़ लो।
– तार के टुकड़े से लूप बनाकर इस छड़ के ऊपरी सिरे पर बाँध दो। लूप का व्यास लगभग 10 सेंटीमीटर का हो।
– लूप को साबुन-पानी में डुबाकर बुलबुला बनाओ।
– एक स्ट्रॉ को साबुन-पानी में भिगाकर सावधानी से बुलबुले के अन्दर घुसाओ।
– और फिर बड़े बुलबुले के अन्दर छोटा बुलबुला बनाओ।

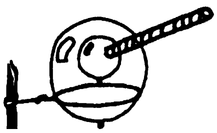

तरह-तरह के बुलबुले बनाने के इन तरीकों को आज़माकर ज़रूर देखना। हाँ कुछ नए तरीके भी खोजना। और जब खोज लो तो हमें भी बताना।

एक लोककथा

साही और खरगोश

गरमी के शुरुआती दिन थे। ठण्डक अपना कारोबार समेट रही थी और गरमी अपने काफिले के साथ कदम-कदम बढ़ रही थी। ये वे दिन होते हैं जब पेड़ों और ज़मीन पर रहने वाले जीव मज़े में होते हैं। जी भर चारा चरने के लिए रहता है। जानवरों को खाने के लिए ज़ोर आज़माइश नहीं करनी पड़ती।

मौसम तो इतना अच्छा होता है कि पूछिए मत! पीठ पर पड़ी हल्की धौल या गाल पर पड़ी हल्की चपत-सी हल्की-हल्की हवाएँ चलती रहती हैं। कुल मिलाकर ज़िंदगी मजे में कटने के दिन।

कहीं लार्क (एक पक्षी) गा रहे होते हैं तो कहीं बाग में अड्डा जमाए मक्खियाँ अपना तान छेड़े रहती हैं। और बरसीम! वह तो ओस में लिपटी खूब मज़े से डोलती रहती है। इस मौसम में लगता है सब कुछ ज़रा तेज़ी से बढ़ने लगा है। इसी चुलबुली गुस्ताख दुनिया में एक साही परिवार भी है। खूब उछलकूदी और मस्तमौला।

इतवार की एक धुपैली दोपहर को साही ने सोचा, 'मेरा परिवार मेरे बगैर एक दो घण्टे तो रह ही सकता है। तो क्यों न मैं अपने शलजम ही देख आऊँ।' अपनी पत्नी से जल्दी आने का कहकर श्रीमान साही ने खेतों की राह पकड़ी।

ये शलजम ही हैं जिनसे साही अपना गुज़ारा करता है इसलिए इन्हें वो अपने ही समझता है। भले ही इनका मालिक एक किसान है जो दो फर्लांग दूर एक गली में रहता है। साही रास्ते पर गुनगुनाता हुआ आगे बढ़ रहा था। पेड़ों और झाड़ियों के घने जाल से दाएँ-बाएँ होकर उसका खेत आता था। इस बार उम्दा बेरी आएँगी। बेर से लदे पेड़ देखकर उसके मन में लड्डू फूट रहे थे। शलजमी ज़मीन पर उसने पाँव रखा ही था कि उसे खरगोश दिखा।

"सलाम! खरगोश भाई। कैसे हो?"

सलाम का जवाब देते हुए खरगोश बोला, "बस ठीक हूँ जुएँ वाले साही भाई! तुम कैसे हो?"

"बस आपकी दुआ है, खरगोश भाई!" साही बोला।

"खूब जुएँ हो गए हैं।" साही को फिर खरगोश ने छेड़ा।

"हाँ, क्या तुम इनमें से एकाध लेना पसंद करोगे?"

खरगोश ने बड़ी हिकारत से साही को देखा, "अच्छा, शलजम चुरा रहे थे?"

साही क्या कहता, उसने बस यही कहा, "मैं तो सिर्फ शलजमें देख रहा था। अच्छा, खरगोश भाई! तुम अपनी कहो, क्या फिर गोभी चुराने की फिराक में हो?"

तो पूरी तरह मूर्ख हो चले हो।'' खरगोश ने आँखें फैलाते हुए कहा।

साही ने बोल तो दिया, मगर समझ गया कि वह फँस गया है। उसने धीमी आवाज़ में कहा, ''तुम मुझे ज़लील कर रहे हो?''

''अच्छा ठीक है, शर्त क्या होगी?'' खरगोश ने पूछा। तय हुआ कि एक अनानास और एक मुट्ठी सूरजमुखी के दाने।

खरगोश गरम हो गया, बोला, ''क्या तुम गोभी का मसला छोड़ने की ज़हमत उठाओगे।''

साही ने कहा, ''और तुमने मेरे बारे में ऐसा सोचा, कितनी बुरी बात है। अरे भाई मैं तो बस तफरीह करने निकला था।''

खरगोश हँसने लगा, ''क्या कहा तफरीह! वाह, तो आप बिना पाँव के भी तफरीह कर लेते हैं?''

यह तो साही की दुखती रग थी। उसके पाँव भले ही ठिगने और तिरछे हों मगर वो इनके बारे में बहुत भावुक था। ''ये मेरा निजी मसला है, तुम्हें मुझसे माफी माँगना चाहिए।''

''अरे भाई मुझे तो ये भी पता नहीं चलता कि तुम खड़े हो या बैठे हो?'' खरगोश इस बार ज़ोर से खिलखिला उठा।

''मेरे पाँव किसी भी तरह तुम्हारे पाँव से कमतर नहीं हैं'' साही ने सफाई दी।

''ओहो... तो ये बात है'' खरगोश के यह कहते ही साही बोला, ''अच्छा, क्या तुम चाहते हो कि मैं अपनी बात साबित करूँ।''

''वो तो ठीक है साही भाई, मगर तुम साबित करोगे कैसे?'' खरगोश ने कहा।

साही बोला, ''तुम्हारे साथ दौड़ लगाकर।''

''क्या मज़ाक कर रहे हो। मेरे साथ दौड़ोगे? तुम

खरगोश राज़ी हो गया। उसने कहा, ''ठीक है, मगर ये दौड़ होगी कब?''

''जल्दी क्या है खरगोश भाई, ज़रा एकाध घण्टे मैं कुछ तैयारी तो कर लूँ। और हाँ दौड़ जुते हुए खेत के पोरों पर होगी।'' साही ने कहा।

खरगोश सोच रहा था, 'कैसा मूर्ख है। अभी भी अपनी बात पर किस कदर अड़ा है।'

उधर साही भी सोच रहा था, 'यार बात तो सही है, न तो मेरे पैर उतने लम्बे और न ही उसके जैसे तेज़। खैर... मेरे पास दिमाग है। जो उस उल्लू के पास नहीं है। अब सोचना तो यह है कि कौन-सी तरकीब काम करेगी।' उसे कुछ सूझा, वह उल्टे पाँव घर की तरफ दौड़ा।

उसने अपनी पत्नी को आवाज़ लगाई, ''अरे जल्दी बाहर आओ। मैंने खरगोश से दौड़ की शर्त लगा ली है।''

''बेवकूफ मत बनो, तुम खरगोश की बराबरी से दौड़ोगे?'' साही की पत्नी ने कहा।

''हाँ, मैं उसके साथ दौडूँगा, ज़रा जल्दी करो, हमें वहाँ तुरंत पहुँचना है।''

''हम से तुम्हारा क्या मतलब है? कहीं तुम मेरे दौड़ने के बारे में तो नहीं सोच रहे हो?''

''बिल्कुल सही, मैं वही सोच रहा हूँ।'' साही ने

उधर खरगोश भी वक्त से पहुँच गया। साही ने उसे देखते ही कहा, "मैं तो तुम्हारा ही इंतज़ार कर रहा था खरगोश भाई।"

"अरे भाई अपने पाँवों के साथ आए हो, या फिर उनके बगैर ही दौड़ोगे?" खरगोश ने व्यंग्य से कहा।

मुस्कुराते हुए कहा। रास्ते में उसने अपनी तरकीब पत्नी को बताई।

दोनों झाड़ियों, पेड़ों के जाल से गुज़रते हुए खेत जा पहुँचे। आसपास की लदी बेरियों को देखकर साही की पत्नी बड़ी खुश हो रही थी। चलते-चलते उसने कहा, "लगता है इस बार बेरी खूब आएँगी।"

"अरे अभी वो सब मत सोचो। तुम जानती हो न कि तुम्हें क्या करना है?" साही बोला।

"हाँ मैं जानती हूँ।"

"तो जाओ, इससे पहले कि खरगोश पहुँचे, वहाँ जाकर छूप जाओ।"

साही मन मसोसकर रह गया।

"तो ठीक है, दौड़ शुरू करते हैं।" वे सीधे खड़े हुए और दौड़ शुरू हुई।

खरगोश ने कान पीछे किए और कुलाँचें मारते हुए ऐसे दौड़ा जैसे उसके पीछे तेज़ दौड़ने वाले पचास कुत्ते पड़े हों।

और साही ...! वो तो बमुश्किल तीन कदम ही चला होगा और जाकर झाड़ियों में छुप गया। और सोचने लगा... 'अब पता चलेगा... पुराने घिसे दिमाग वाले को कि कैसे हैं मेरे पाँव।'

उधर खरगोश सोच रहा था, 'कितना शानदार दौड़ाक हूँ मैं।'

खरगोश तय स्थान पर पहुँचा कि आवाज़ आई, "क्यों आ गए?" झाड़ियों में से साही का सिर उभरा।

खरगोश को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। उधर साही की पत्नी (जिसे खरगोश साही समझ रहा था) ने कहा, "अरे इसमें मुश्किल क्या है। हाँ इसके लिए बस शानदार पैर होने चाहिए।"

खरगोश ने एक और दौड़ का प्रस्ताव रखा, "एक बार और दौड़ोगे? क्योंकि मुझे इसके बगैर यकीन नहीं होगा।"

"ठीक है।" साही की पत्नी ने कहा, "इस बार इस तरफ से उस छोर की ओर दौड़ेंगे।"

दौड़ शुरू हुई। इस बार भी खरगोश जोर लगाकर दौड़ा, जैसे कोई खूँखार बिल्ली उसका पीछा

कर रही हो। साही की पत्नी तो अपनी जगह से हिली भी नहीं। और खरगोश के दौड़ते ही वह फिर आराम से जाकर झाड़ियों में छिप गई।

खरगोश जैसे ही दूसरे छोर पर पहुँचा, देखा कि साही तो सामने खड़ा है।

खरगोश को यकीन नहीं हो रहा था, मगर वह इस दौड़ को झूठ साबित नहीं कर सकता था। उसने एक और दौड़ की पेशकश की।

"शौक से।" साही उत्साह से बोला।

दौड़ों का यह दौर चलता रहा। हर बार जब खरगोश दौड़ खत्म करने को होता कि साही को सामने खड़ा पाता।

शाम हो गई थी। अब तक कुल 73 दौड़ें हो चुकी थीं। खरगोश की हालत बिल्कुल खस्ता हो गई थी। उसके कान नीचे की ओर लुढ़क रहे थे, आँखें डूब रही थीं। बस वो किसी भी वक्त लुढ़क सकता था। खरगोश ज्यों ही गिरा, साही बोला, "क्यों भाई यकीन हो गया।"

"नामुमकिन. . ." खरगोश मरी आवाज़ में फुसफुसाया

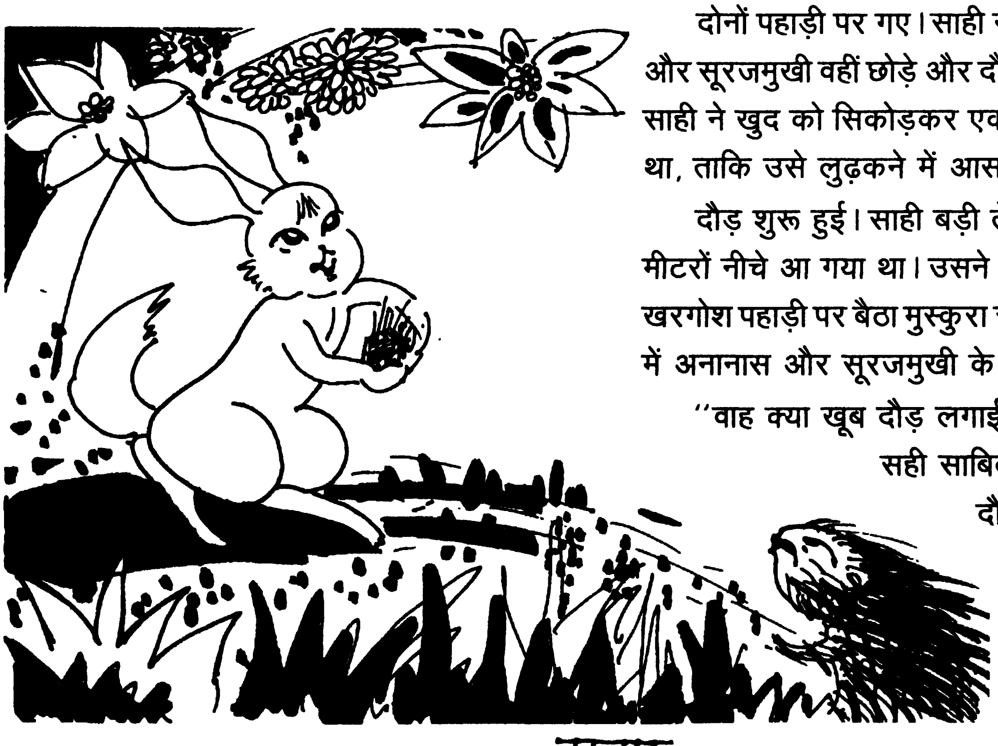

"अरे, खरगोश भाई ये सब तो मेरे इन शानदार पैरों का कमाल है।" साही तो शर्त जीत ही चुका था, अपने हिस्से के अनानास और सूरजमुखी के दाने समेटे और चल पड़ा।

चलते-चलते साही ने खरगोश से कहा, "अच्छा क्या तुम कभी मेरी पत्नी से मिले हो?"

साही की पत्नी झाड़ियों से बाहर आई। खरगोश को शायद सब कुछ समझ में आ चुका था। उसने थोड़ा सोच-विचार करने के बाद एक आखिरी दौड़ की पेशकश की।

"नहीं! अब नहीं मैं 73 बार जीत चुका हूँ।"

"बस, एक बार और साही भाई, सिर्फ तुम्हारे और मेरे बीच में। एक घाटी की दौड़, ऊपर से नीचे यानी ढाल की दौड़।" खरगोश नरमी से बोला।

साही को खरगोश पर तरस आ गया। इतनी दौड़ें जीतकर वो खुद को बड़ा अकलमंद समझने लगा था।

उसने सोचा, 'वैसे भी घाटी की दौड़ तो मैं पत्नी की मदद के बगैर ही जीत सकता हूँ।'

"ठीक है खरगोश भाई। अगर तुम अपने दिन को बदतर ही करना चाहते हो तो ठीक है।"

दोनों पहाड़ी पर गए। साही ने जीते हुए अनानास और सूरजमुखी वहीं छोड़े और दौड़ने को तैयार हुआ। साही ने खुद को सिकोड़कर एक गेंद सा बना लिया था, ताकि उसे लुढ़कने में आसानी हो।

दौड़ शुरू हुई। साही बड़ी तेज़ी से लुढ़कते हुए मीटरों नीचे आ गया था। उसने सिर उठाकर देखा, खरगोश पहाड़ी पर बैठा मुस्कुरा रहा था। उसके हाथों में अनानास और सूरजमुखी के दाने थे।

"वाह क्या खूब दौड़ लगाई। आखिर यह बात सही साबित हो ही गई कि दौड़ने के लिए तुम्हें पैरों की ज़रुरत नहीं पड़ती ••

अनुवाद : सुशील शुक्ल
सभी चित्र : आशा रोमन

बच्चों के अधिकारों के लिए दुनिया के बच्चों का पुरस्कार

यह फ्रांसीन लैन्सडाउन है। इसकी तमन्ना है कि एक ऐसी दुनिया बने जहाँ किसी बच्चे को कभी मार-पीट न सहना पड़े। शायद तुमने भी कभी ऐसा सोचा होगा।

फ्रांसीन 17 साल की है और लन्दन में रहती है। वह एक ऐसे समूह की सदस्य है जिसका नाम है आर्टिकल 12। आर्टिकल 12 दरअसल संयुक्त राष्ट्र संघ का बच्चों के अधिकारों पर बने घोषणापत्र का एक हिस्सा है। इसका सार यह है कि, 'अगर बड़े लोग कोई ऐसा निर्णय ले रहे हों, जिसका किसी न किसी तरह से तुम बच्चों पर असर पड़ता हो, तो तुम्हें भी अधिकार है कि तुम अपनी बात, अपनी राय उन्हें बताओ। और बड़ों की यह ज़िम्मेदारी है कि वे तुम्हारी बात को गम्भीरता से सुनकर फिर ही अपने निर्णय के बारे में विचार करें।'

फ्रांसीन कहती है, "यहाँ ब्रिटेन में हमारे मम्मी-पापा लोगों को इस बात की अनुमति है कि वे अपने बच्चों को प्यार भरे चपत लगा सकें। लेकिन बच्चों को मार-पीट करना तो ठीक नहीं।" फ्रांसीन आर्टिकल 12 नामक इस संगठन में तब से ही जुड़ी हुई है जब से इसकी शुरुआत हुई। तब वह 9 साल की थी।

इस संगठन में अब पूरे ब्रिटेन में फैले हुए लगभग 500 सदस्य हैं और सभी 18 साल से कम उम्र के हैं। यह संगठन बच्चों का है और बच्चों के अधिकारों के लिए ही काम करता है। इसके सारे निर्णय भी बच्चे खुद ही लेते हैं - बिना किसी भी बड़े की दखलंदाज़ी के।

आर्टिकल 12 के सदस्य चाहते हैं कि शारीरिक सज़ा पूरी तरह से बन्द हो जानी चाहिए। इसलिए पिछले साल इसने 'पिटाई के खिलाफ' एक बड़ी रैली का भी आयोजन किया था। रैली के अन्त में इसी आशय की एक अपील ब्रिटेन के प्रधानमंत्री को भी सौंपी गई थी। "लेकिन अभी तक उन्होंने इस बारे में कोई जवाब नहीं दिया है," फ्रांसीन बताती है।

वो कहती है, "हम यह भी चाहते हैं कि हमारे देश में आम चुनावों में वोट डालने के अधिकार की सीमा 18 साल से घटाकर 16 साल कर दी जाए। और सभी स्कूल-कॉलेजों में छात्र समितियों के गठन को ज़रूरी बना देना चाहिए। फिर कुछ ऐसे तरीके बनाए जाएँ जिससे इस बात की निगरानी होती रहे कि इन छात्र समितियों को फैसले करने के अधिकार सचमुच हासिल हैं या नहीं। कि क्या इन स्कूल-कॉलेजों के बड़े लोग फैसले लेते समय इन समितियों की बात पर वाकई विचार करते हैं या नहीं।"

फ्रांसीन इस बात से दुखी भी होती है कि अगले साल जब वह 18 साल की हो जाएगी तो उसे अपना प्यारा संगठन - आर्टिकल 12 छोड़ना होगा। साथ ही वह बच्चों के अधिकारों के लिए दुनिया के बच्चों के पुरस्कार वाले जजों में भी नहीं रह पाएगी। पर वह कहती है, "मैं शायद ज़िन्दगी भर बच्चों के अधिकारों के लिए ही काम करूँगी। यहाँ नहीं तो और कहीं, और किसी तरह से!"

बच्चों के अधिकारों के लिए दुनिया के बच्चों के पुरस्कार वाले जजों में फ्रांसीन उन बच्चों की प्रतिनिधि है जो अपने और दूसरे बच्चों के अधिकारों के लिए काम करते हैं।

मुश्किल राहों को आसान बनाता एक स्कूल

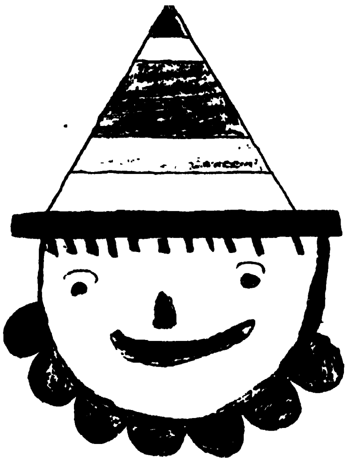

राकेश बजाज

मिरियम स्कूल, भोपाल का एक खास स्कूल है। वहाँ तकरीबन 200 लड़के-लड़कियाँ पढ़ते हैं। इस स्कूल के एक हिस्से में करीने से जमे कुछ कमरे हैं जिनमें भोपाल के बाहर से आने वाले छात्र-छात्राएँ रहते हैं। इस स्कूल की जो बात आपको सबसे पहले प्रभावित करेगी, वह है यहाँ के शिक्षक। इस स्कूल में पंद्रह -सोलह शिक्षक हैं। सबके सब खुशमिज़ाज और दोस्ताना स्वभाव वाले। इतने नरम कि शायद ही उनमें से किसी को गुस्सा होना आता हो।

जब मैं इस स्कूल में दाखिल हुआ, सुबह के कोई दस बजे होंगे। तेरह-चौदह की उम्र की छह-सात लड़कियाँ गा रही थीं। गाने के बीच-बीच में हारमोनियम और तबले की थापें सुनाई दे जाती थीं। इतनी कसी हुई आवाज़ और इतना दिलकश संगीत। वे भी हमारी तरह मुकम्मिल हैं, बस उनके दिमाग ने उनकी उम्र का साथ नहीं दिया। जितना भी मिला वे उसी को सहेजने में जुटे हैं। और ज़िंदगी की तमाम चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।

भले ही यह उनके लिए फिजूल हैं, फिर भी वे हमारी तरह पेश आने के लिए कितने ही कायदे-रस्में सीखते हैं। खुद को बदलने की मुश्किलें हम शायद ही समझ पाएँ।

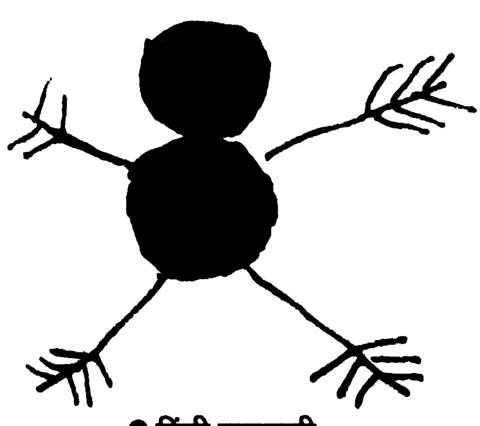

● पिंकी लालवानी

इसी स्कूल की एक शिक्षिका कहती हैं, ''ये बच्चे बहुत भावुक हैं, आम बच्चों से कहीं ज़्यादा। ज़रा सा भेदभाव उन्हें बहुत पीछे धकेल देता है। इसलिए इनसे रिश्ता रखने वाले हर एक को फूँक-फूँककर कदम रखना चाहिए। कई पालक समझते हैं कि उन्होंने बच्चे को स्कूल में डाल दिया बस, अब क्या करना है। लेकिन स्कूल में तो बच्चा महज़ चार-पाँच घण्टे ही रहता है।''

मिरियम स्कूल में 60 फीसदी लड़के हैं और 40 फीसदी लड़कियाँ। इस स्कूल में 4 से 18 साल की उम्र के बच्चे पढ़ते हैं।

स्कूल की कोशिश होती है कि जब बच्चे वहाँ से निकलें तो वे कम से कम पाँचवीं की परीक्षा पास कर चुके हों। पाँचवीं के बाद बच्चे क्या करेंगे किसी को पता नहीं। मिरियम स्कूल की एक शिक्षिका कहती हैं, ''लड़के फिर भी जी लेंगे लेकिन लड़कियों की राहें और भी मुश्किल हैं। यह नई बात नहीं है, आम लड़कियाँ भी तो कितना कुछ झेलती हैं।''

सरकार ने शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों

को नौकरियों में आरक्षण दिया है। मगर दिमागी रूप से कमज़ोर व्यक्तियों के लिए कोई योजना नहीं है। पाँचवीं पास बच्चा कम से कम दफ़्तर में सहायक का काम तो कर ही सकता है। मगर पहल कौन करे। पिछले साल इस स्कूल के चार बच्चों ने म. प्र. बोर्ड की पाँचवीं की परीक्षा पास की है।

हम बेली से मिले। बेली की उम्र होगी बाईस-तेईस साल। बेली थोड़ा बहुत लिख-पढ़ लेते हैं। खेलों में उनकी बहुत रुचि है, खासकर स्केटिंग में। पहले वे इसी स्कूल के छात्र थे। अब वे इस स्कूल में खेल शिक्षक की मदद करते हैं।

उनके दो ख्वाब हैं, "एक तो मैं तैरना सीखूँगा और बड़ी झील है न, उसमें तैरेंगे।"

और दूसरा, " मिट्टी के सुंदर-सुंदर खिलौने बनाना है।"

ये सब तो वे करेंगे लेकिन वे स्कूल नहीं छोड़ना चाहते, उन्हें वहाँ अच्छा लगता है।

इसी स्कूल के कुछ बच्चों की रचनाएँ हम यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं।

● सरीता श्रीवास्तव

मैं आज आपको पेड़ के बारे में बता रहा हूँ। पेड़ कई प्रकार के होते हैं। जैसे आम, अमरूद, नींबू, कटहल, संतरा, नीम, पपीता आदि।

आम के पेड़ से हमें कच्चा आम और पक्का आम मिलता है। कच्चे आम से सब्जी, अचार, पना, अमचूर बनता है। यह खाने में खट्टा होता है। पक्का आम मीठा होता है। इससे जूस, आमरस, बरफी आदि बनते हैं।

● मनीष

हमारे स्कूल में एक छोटा बगीचा है। उसमें कई तरह के पेड़ पौधे हैं। बगीचे में पौधों पर कई तरह के फूल खिले हैं। जैसे गुलाब, चमेली, गेंदा, सूरजमुखी और डहलिया आदि फूल लगे हैं। पेड़ के नाम – आम, कटहल और जामफल और नींबू है। पेड़ से हमें शुद्ध हवा प्राप्त होती है।

● विवेक ठाकुर

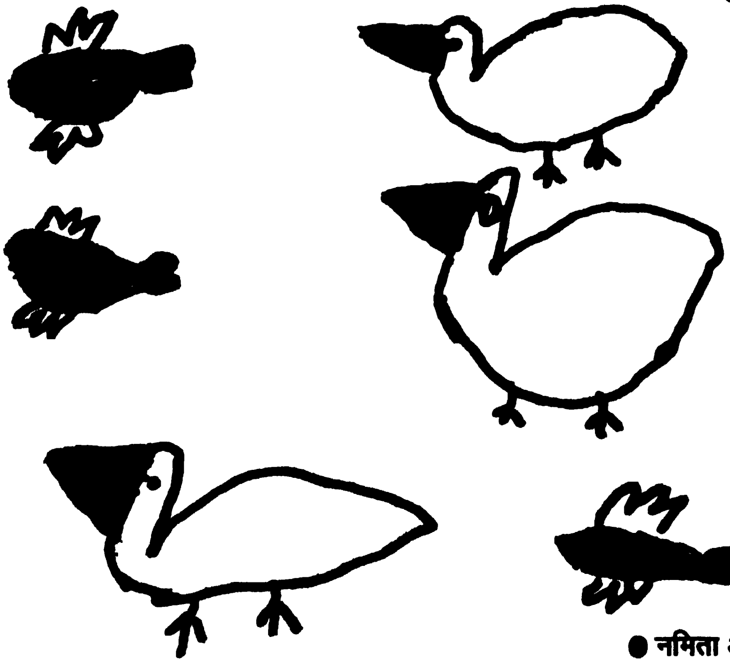

● नमिता अग्रवाल

स्कूल

मेरे स्कूल का नाम मिरियम स्कूल है। यह अरेरा कॉलोनी भोपाल में है। मैं यहाँ पर कक्षा चार में पढ़ाई करता हूँ। स्कूल में पंद्रह कमरे हैं। हमारा स्कूल साफ और हवादार है। स्कूल में पंद्रह टीचर हैं। मेरी टीचर मिसेस जैन हैं। हम पढ़ाई के साथ खेल-कूद, व्यायाम करना, संगीत भी सीखते हैं। हमारे स्कूल की प्राचार्या सिस्टर नोयल है। वह मुझे अच्छी लगती हैं। मेरा स्कूल मुझे अच्छा लगता है।

● तरुण अग्रवाल

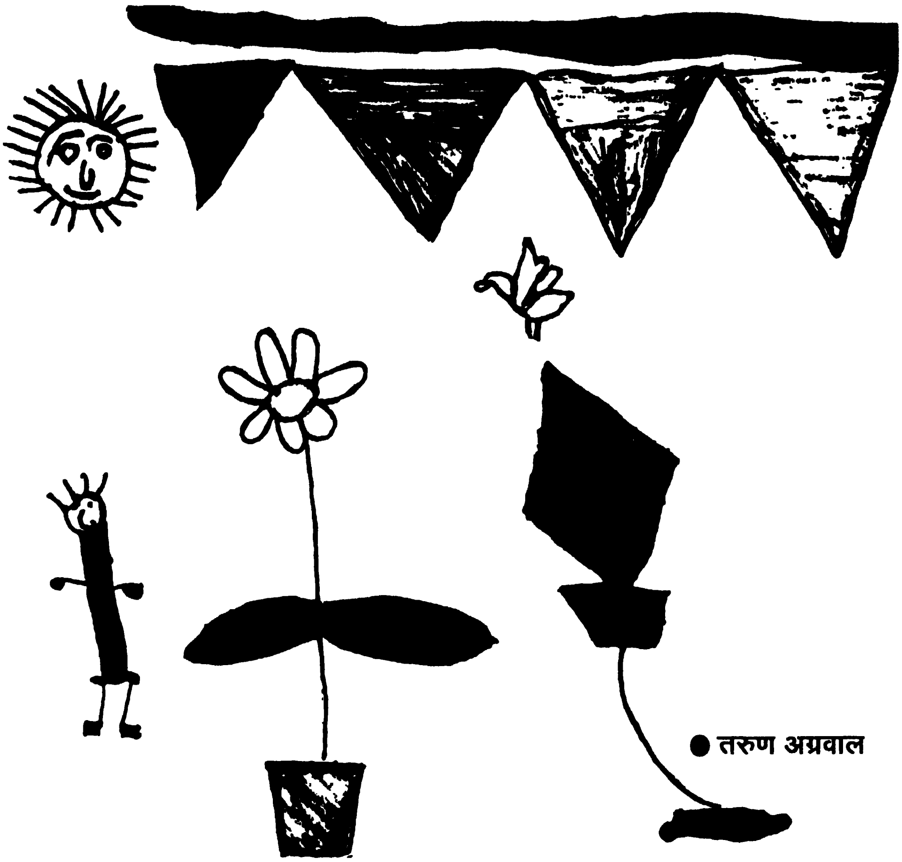

● तरुण अग्रवाल

खेल

खेलने से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है। खेल से हमारे शरीर में फुर्ती रहती है। हम स्कूल में बास्केट बॉल, क्रिकेट, टेबल टेनिस, हॉकी, बेडमिंटन, खोखो आदि खेल खेलते हैं। मुझे स्केटिंग करना अच्छा लगता है।

● वाजिद खान

मेरा नाम भावेश जैन है। मैं मिरियम स्कूल में कक्षा 6 में पढ़ता हूँ। मुझे टेबल टेनिस और क्रिकेट खेल खेलना अच्छा लगता है। पेपर पढ़ना, टी. वी. देखना और मेकेनिकल गेम खेलना अच्छा लगता है। मैं तुलसी नगर भोपाल में रहता हूँ।

● भावेश जैन

● यश कामटे

● रिपोर्ट : सुशील शुक्ल

कहानी की कहानी और चौरंगी पतंग

कुछ कथाएँ बरसों से चली आ रही हैं जो ज़बान दर ज़बान बड़ी होती हैं। जिस ज़बान पर गईं उसी सरीखी हो गईं। जब चाहो जैसी चाहो शक्ल दे दो। इसी गुंजाइश के चलते ये कथाएँ कभी पुरानी नहीं होतीं। जब भी पढ़ो या कि सुनो, लगता है जैसे किसी ने कल ही हमारे लिए लिखी हों, एकदम ताज़ा।

कहानी की कहानी इसी तरह की किताब है। इस लोक कथा को नई शक्ल में पेश किया है हेमराज भट्ट ने।

कहानी कुछ यूँ है – सावनी और सावन मियाँ-बीबी हैं। सावनी के दिमाग में एक कहानी रहती है। कहानी हमेशा यही चाहती है कि सावनी उसे किसी न किसी को सुनाए। लेकिन सावनी थी कि उसे बाहर ही न निकालती। एक दिन कहानी को शरारत सूझी, वह सावनी के दिमाग से निकलकर एक बकरी की शक्ल ले लेती है। फिर क्या हुआ।

. . . .नहीं, अभी अगर पूरी कहानी बता दी तो किताब पढ़ने का मज़ा ही क्या रह जाएगा।

एक और किताब के बारे में बताते हैं। इसका नाम है चौरंगी पतंग। यह कोई आम पतंग नहीं है।

इसको बनाने में अब्दुल चाचा ने अपनी पूरी मेहनत झोंक दी। पतंग बनकर दुकान में आई। जो भी देखता, बस देखता रह जाता। कुछ ने दाम भी पूछे, मगर पतंग की कीमत इतनी ज़्यादा है कि कोई खरीदने को तैयार नहीं। पतंग तो ठहरी हवा में उड़ने की शौकीन। उसे भला अब्दुल चाचा की छोटी-सी दुकान में कैसे अच्छा लगता। लेकिन अंत में एक लड़की पतंग को आसमान में उड़ाने ले जाती है।

चौरंगी पतंग एक सुन्दर कहानी है, चित्र भी अच्छे बने हैं। लेकिन इसमें एक बात खलती है – अंत में एक छोटी लड़की पतंग लेकर जाती है लेकिन जब पतंग उड़ाने की बात आई तो भैया पतंग उड़ाने लगे। चित्र में एक लड़के को पतंग उड़ाते दिखाया गया है। वही हमेशा की बात – क्या लड़कियाँ पतंग नहीं उड़ा सकतीं?

समीक्षा : सुशील शुक्ल

किताब का नाम : कहानी की कहानी
लेखक : हेमराज भट्ट
चित्रकार : प्रिया नागराजन

किताब का नाम : चौरंगी पतंग
लेखक : डॉ. मीनाक्षी स्वामी
चित्रकार : परेश चौधुरी

ये किताबें नालंदा लखनऊ, राष्ट्रीय बाल साहित्य केन्द्र नई दिल्ली (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) तथा यूनीसेफ लखनऊ द्वारा आयोजित कार्यशाला में तैयार की गई हैं।

दो हाथियों की दास्तान

महागिरि

महागिरि एक रोचक और मज़ेदार कहानी की किताब है। कहानी में अलग-अलग दो घटनाएँ हैं पर आपस में उनमें एक जुड़ाव भी है। इस पुस्तक के चित्र सुन्दर और भाषा एकदम सरल है जो कि बच्चों को आसानी से समझ में आ सकती है। इसके बड़े आकार के अक्षर बच्चों को स्वयं पढ़ने के लिए आकर्षित भी करेंगे।

लेखिका ने कहानी में हाथी को एक ऐसे पात्र के रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश की है जो खुद विशालकाय शरीर का होने के बावजूद एक नन्ही बिल्ली को चोट नहीं पहुँचाना चाहता है। वह महावत से खूब पिटता है किन्तु फिर भी उसके मन में उस नन्ही बिल्ली के प्रति वही सम्वेदना, दर्द बना रहता है। और अंत में महागिरि सबका चहेता बन जाता है।

किताब का नाम : महागिरि
लेखक : हेमलता
चित्रकार : पुलक विश्वास
अनुवाद : नरेंद्र शर्मा
प्रकाशक : चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट
मूल्य : 15.00 रुपए

मोरा

मोरा एक मार्मिक कहानी है। नन्हा-सा हाथी किन-किन तकलीफों को सहकर एक विशालकाय हाथी बनता है। इंसान किस प्रकार प्रकृति को मनमोहक और हसीन बनाने वाले जानवरों पर अत्याचार करते हैं। कहानी के बीच-बीच में कई ऐसी घटनाएँ हैं जिनको पढ़कर मन दुखी हो जाता है। कहीं-कहीं नन्हें मोरा की अठखेलियाँ मन को खुश भी कर देती हैं।

किताब के चित्र भी काफी असरदार हैं जो पूरी कहानी को समझने में मदद करते हैं। कहानी को एक बार शुरू करने के बाद जब तक पूरा न पढ़ लिया जाए, तब तक एक उत्सुकता बनी रहती है।

किताब का नाम : मोरा
लेखक : मुल्कराज आनंद
चित्रकार : रूपर्ट हेलर
अनुवाद : नरेंद्र शर्मा
प्रकाशक : नेशनल बुक ट्रस्ट
मूल्य : 10.50 रुपए

समीक्षा : चन्द्रप्रकाश कड़ा

खेल समाचार

क्रिकेट : न तुम हारे, न हम हारे

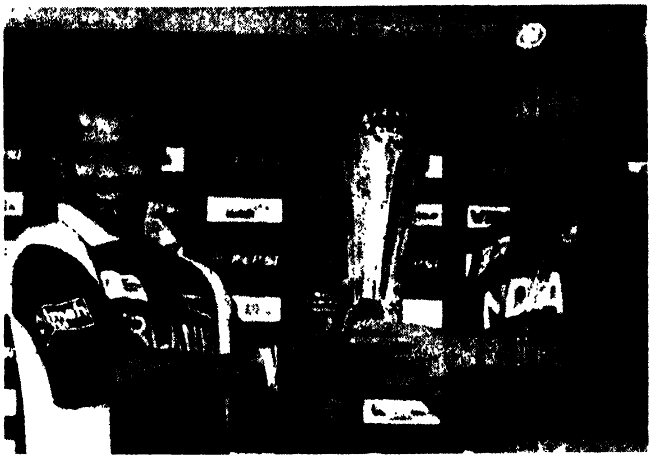

चैम्पियन्स ट्रॉफी में दुनिया की 12 बेहतरीन क्रिकेट टीमों ने भाग लिया। हर मैच कशमकश भरा रहा। लेकिन फायनल मैच बारिश के कारण फीका रहा। फायनल मैच भारत और श्रीलंका के बीच हुआ। श्रीलंका ने पहले बैटिंग करते हुए 222 रन बनाए थे। भारत ने इसके जवाब में दो ओवर में 14 रन ही बनाए थे कि बारिश होने लगी। आखिर में तय हुआ कि ट्रॉफी दोनों टीमों को संयुक्त रूप से दी जाए।

टेनिस : अमेरिकी ओपन

सितम्बर का महीना पीट सम्प्रास के लिए अच्छा रहा। वे लगभग सवा दो साल से लगातार हार रहे थे। आखिरकार उन्होंने अमेरिकी ओपन जीत लिया। यह खिताब उन्होंने आंद्रे अगासी को हराकर जीता। यह उनकी 14वीं खिताबी जीत है।

हॉकी : चैम्पियंस ट्रॉफी

नीदरलैण्ड में हुए चार देशों के टूर्नामेंट में बेहतरीन प्रदर्शन करने के बाद भारतीय हॉकी टीम ने चैम्पियंस ट्रॉफी में भी उम्दा प्रदर्शन किया। हालाँकि वह चौथे स्थान पर रही। चैम्पियंस ट्रॉफी में भारतीय टीम ने नीदरलैण्ड से ड्रॉ खेला और आस्ट्रेलिया और पाकिस्तान जैसी मज़बूत टीमों को हराया।

काँस्य पदक यानी तीसरे स्थान के लिए हुए मैच में भारतीय टीम पाकिस्तान से हार गई। भारतीय हॉकी खिलाड़ी धनराज पिल्लै को मैन ऑफ दी टूर्नामेंट का खिताब मिला।

एशियाई खेल :

इयोसियो-ओसियो यानी 'स्वागत है'। दक्षिण कोरिया में इसी तरह एशिया भर से आए खिलाड़ियों का स्वागत किया गया। 29 सितम्बर से शुरू हुए एशियाई खेल 14 अक्टूबर तक चलेंगे। बुसान में हो रहे इन खेलों में तकरीबन दस हज़ार खिलाड़ी भाग ले रहे हैं। एशियाई खेल एशिया महाद्वीप में शांति, सद्‌भाव और एकता के संदेश के साथ शुरू हुए।

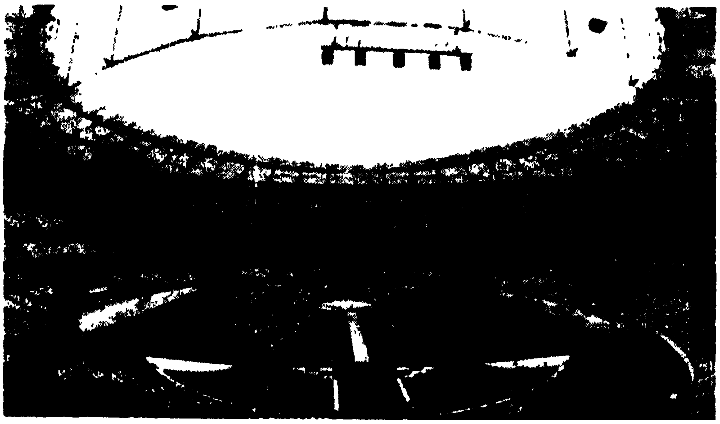

इस बार का नारा है.. नई दृष्टि नया एशिया। मार्चपास्ट में भारतीय दल का नेतृत्व धनराज पिल्लै ने किया। भारत ने राष्ट्रकुल खेलों में बेहतरीन प्रदर्शन किया था, इसीलिए भारतीय खिलाड़ियों पर सभी की नज़रें टिकी हैं। जब तक ये अंक तुम तक पहुँचेगा कितने ही पदकों का फैसला हो चुका होगा।

स्पेशल ओलम्पिक :

सितम्बर में भोपाल में स्पेशल ओलम्पिक की राज्य स्तरीय प्रतियोगिताएँ हुईं। प्रतियोगिता में विभिन्न शहरों के बच्चों ने शिरकत की। भोपाल के ही मिरियम स्कूल के बच्चों ने स्केटिंग में न सिर्फ बेहतरीन प्रदर्शन किया बल्कि उन्होंने ओवर ऑल चैम्पियनशिप भी जीती। नीचे का फोटो उसी मौके का है।

सितम्बर के अंतिम सप्ताह से स्पेशल ओलम्पिक की राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताएँ सात शहरों में शुरू होंगी। ये शहर हैं – दिल्ली, चण्डीगढ़, कोचीन, पॉण्डीचेरी, चेन्नई, अहमदाबाद और बंगलौर।

भारत ने जीते 5 स्वर्ण पदक!

एशियाई खेलों के लिए बुसान गई भारतीय टीम ने इस अंक के छपने जाने तक 5 स्वर्ण पदक जीत लिए हैं। जिन खेलों में ये पदक मिले हैं, वे हैं –

स्नूकर
गॉल्फ
कबड्डी
लम्बी कूद
गोला फेंक

माथापच्ची : हल
सितम्बर , 2002 अंक के

1. इन आँकड़ों के आधार पर वाहनों की अलग-अलग संख्या पता नहीं कर सकते। हाँ, सम्भावनाएँ जरूर पता कर सकते हैं जैसे 10 कारें और 30 मोटरसाइकिल।

2. 8 या 4

3. 72

4.

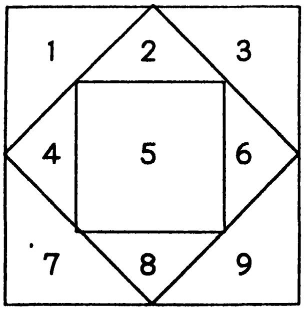

5. 420 दिन बाद।

समाचार संकलन : सुशील शुक्ल

माथापच्ची

❶

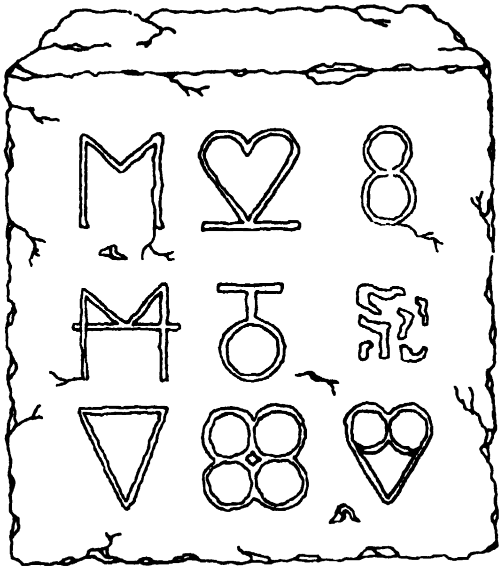

यह जो पत्थर तुम देख रहे हो, उस पर 9 चिन्ह बने हैं। असीम कहता है यह ज़रूर पुराने ज़माने की अनजान लिपि है। आशी भी पहले-पहल उससे सहमत हो गई। मगर जब उसने गौर से देखा तो सारा माजरा समझ में आ गया।

हाँ एक बात और। छठवें नम्बर का निशान कुछ मिट-सा गया है। लेकिन इससे फर्क नहीं पड़ता क्योंकि इन 9 चिन्हों में एक रिश्ता जो है। क्या तुम इस लिपि को पढ़ सकते हो? सुराग . .?

अब सुराग क्या दें, समझ लो कि अंकों के घर भी आइने होते हैं।

❷

कहार, कसार, कछार – ऐसे अनगिनत शब्द होंगे। ये तीन अक्षर वाले शब्द हैं। इनके अर्थ भी हैं। साथ ही ये सभी 'क' से शुरू होते हैं और 'र' पर खत्म होते हैं। क्या पाँच मिनिट में तुम ऐसे पाँच-छह शब्द और खोज सकते हो?

❸

तबस्सुम को क्या पता था कि जो दस फूल वह मम्मी को देने के लिए लाई थी, वे राशिद के हाथ लग जाएँगे। ये तो उसे मालूम था कि फूल उसने कमरे में ही छिपाए हैं। लेकिन पूरे कमरे को छानना कम मुश्किल नहीं है। खैर, कमरे को गौर से देखो और ढूँढो क्या तुम्हें तबस्सुम के दसों फूल दिखे?

4

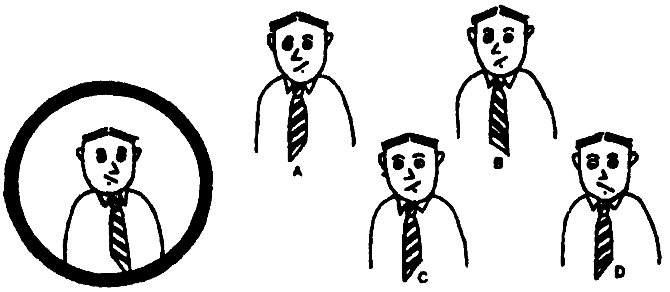

आइना तो तुम भी देखते ही होगे। यहाँ आइने में जो चेहरा दिख रहा है वह इन चार में से किसी एक का है। ज़रा दिमाग तो लड़ाओ किसका चेहरा है?

5

```
 * 3 * 4
   * 0 3
   6 2 *
     5 0
+      *
--------
 9 * 7 3
```

* यह कौन-सा अंक है?

6

एक ऐसी संख्या है जिसे चाहे पाँच से गुणा करो या कि पाँच से घटाओ, उत्तर एक ही आता है।

7

एक 300 मीटर लम्बी रेलगाड़ी 700 मीटर लम्बे प्लेटफॉर्म को 1 मिनट में पार कर लेती है क्या इन दो चीज़ों के सहारे तुम उस रेलगाड़ी की रफ़्तार पता कर सकते हो?

8

पुलिस इंस्पेक्टर के साथ जो एक महाशय खड़े हैं वे कहते हैं कि कल रात उनके घर चोरी हुई है। चोरों ने पत्थर फेंककर काँच तोड़ दिया। इंस्पेक्टर ने मुआयना किया। और कहा कि ये महाशय झूठ बोल रहे हैं। क्या तुम बता सकते हो कि ऐसी कौन-सी चीज़ पर इंस्पेक्टर की नज़र गई जिससे उन्होंने यह बात कही?

अक्टूबर की चित्र-पहेली

1			■	2		3		4
	■	■	■	■	■		■	
5		6	■	7			■	
	■		■		■	■	■	■
	■	8				9	■	10
■	■	■	■		■		■	
11	■	12			■	13		
	■		■	■	■	■	■	
14					■	15		

संकेत : बाएँ से दाएँ

1. (3)

8. (5)

2. (5)

12. (3)

13. (3)

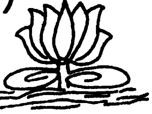

5. अक्ल (3)

7. (3)

14. (5)

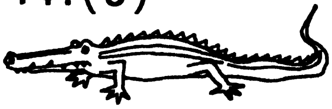

15. (3)

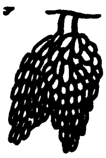

संकेत : ऊपर से नीचे

1. (5)

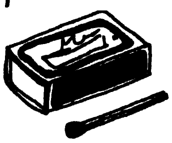

3. (3)

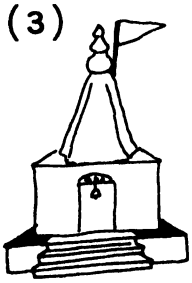

4. (3)

6. (3)

7. (5)

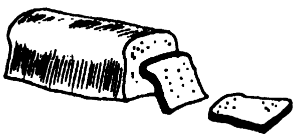

9. अरे! खाने में --- तो है ही नहीं। (3)

10. (5)

11. (3)

12. (3)

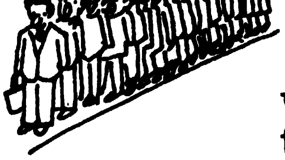

पहेली : सोमेश सक्सेना
चित्र : आशीष नगरकर

अंकिता शर्मा, भोपाल

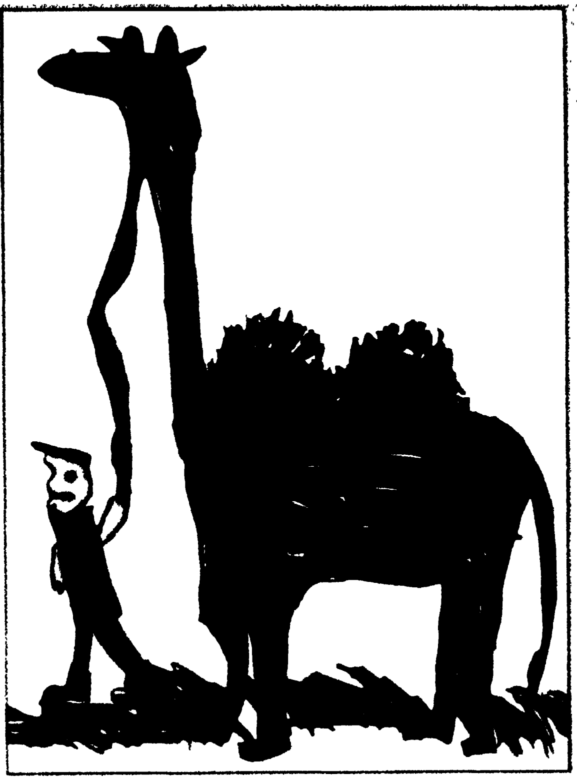

साकार अग्रवाल, 6 वर्ष, इंदौर, म.प्र.

12505